NOTICE,

Registered under Section XVIII of act XXV of 1867.

All rights reserved.

आवश्यक सूचना ।

इस किताबकी रजिष्ट्री सन् १८६६ के ऐक्ट २५ सैक्शन १८ के मुताबिक़ सरकारमें हो गई है। कोई शख्स इसके फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पुलटकर काम निकालनेका अधिकारी नहीं है। यदि कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो राज-दण्डसे दण्डित होगा।

देनाही कर्त्तव्य है। दुःखका विषय है कि—सज्जनके भरोसेपर, परन्तु कानूनी झगड़ोंसे बचते हुए, ऐसा काम भी इन्होंने साहित्य सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और क्षोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारतवासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्याके प्रचारमें बाधा और भारतके नवजीवनोंका अपकार होना स्पष्ट दिखाई देता है तथा पाठक ठगे जाते हैं। एक तो हिन्दीके ग्रन्थोंकी क्या दशा है; यह सभीको मालूम ही है। फिर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि बिगाड़कर हिन्दी-ग्रन्थ-प्रचारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है ऐसा करनेसे सर्वसाधारणकी शिक्षामें क्षति हो सकती है बस, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—बात क्या है, हम नहीं लिख सकते। साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ, इससे इतना ही लिख दिया—हमारी बातें सत्य हैं या नहीं, निष्पक्ष और उदार हृदय समालोचकगण स्वयं बादमें ही, जानके पढ़कर गुणग्न करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय—

हरिदास।

हिन्दी-बँगला शिक्षा

दूसरा भाग

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बंगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बंगला व्याकरण" है।

वर्ण-ज्ञान ।

१। पढ़ने लिखनेके काममें जो जो एक एक आवाज़ें आती हैं उन्हीं को अक्षर कहते हैं।

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं। इसीसे इन चारोंमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড়+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं, इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर ५० वर्ण या अक्षर हैं। इन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं,—स्वर और व्यञ्जन। उनमें १२ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ঌ, এ, ঐ, ও, ঔ। *

---

* ঌ का प्रायः व्यवहार नहीं होता। केवल ক্লৃপ্ত इत्यादि कुछ शब्दोंमें धातुपाठके लिखनेमें उसकी जरूरत होती है, इससे कोई कोई लोग, ঌ को छोड़कर स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं। बँगला भाषामें दीर्घ ৡ नहीं है किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं :—(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। অ, ই, উ, ঋ, ঌ ये पांच ह्रस्व और আ, ঈ, ঊ, ৠ, ৡ, ঐ, ও, ঔ, ये आठ दीर्घ हैं।

অ, ই, উ, ঋ, ঌ इन पांचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और আ, ঈ, ঊ, ৠ, ৡ, ঐ, ও, ঔ इन आठोंके उच्चारणमें उनसे कुछ अधिक समयकी ज़रूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे "[illegible]" (मात्रा) कहते हैं। অ और ঌ इन दोनोंको छोड़कर और और स्वर वर्णोंको व्यञ्जन वर्णोंके साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। जैसे

আ=া, ই=ি, ঈ=ী, উ=ু, ঊ=ূ, ঋ=ৃ,
এ=ে, ঐ=ৈ; ও=ো, ঔ=ৌ।

व्यञ्जन या हल वर्ण।

६। स्वर वर्णोंकी सहायता बिना जो वर्ण साफ़ साफ़ उच्चारित नहीं हो (सक) ते उन्हें व्यञ्जनवर्ण या हलवर्ण कहते हैं। इनके बाद कोई स्वर वर्ण नहीं मिलाकर न पढ़नेसे [illegible]

[illegible]

[illegible]

इन्हीं तीन वर्णोंके रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ड़, ढ़, य, माने जाते हैं। जैसे— बड़, दृढ़, नयन इत्यादि।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे (्) ऐसा चिह्न देना पड़ता है; इस चिह्न या निशानका नाम 'हसन्त चिह्न' है *। जैसे—सम्राट् इत्यादि।

७। क से म तक, पचीस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पांच वर्गोंमें विभक्त हैं, आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग।

८। य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है.

---

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—कल = क् + अ + ल् + अ। किन = क् + इ + न् + अ। बालिका = ब् + आ + ल् + इ + क् + आ। चन्द्र = च् + अ + न् + द् + र् + अ

इस एक पदमें दो या इससे अधिक वर्ण रहते हैं; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

— इसका नाम समास चिह्न है। + इसका नाम युक्त चिह्न है अर्थात इसके द्वारा दो वर्णोंका योग या जोड़ समझा जाता है

श, ष, स, ह, इन चारों का नाम ऊष्म वर्ण है; (ং) और (ँ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ঃ) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है।*

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

অ আ হ ক খ গ ঘ ঙ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

ই ঈ চ ছ জ ঝ ঞ শ য় इनका उच्चारण-स्थान तालू है इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं।†

ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণ র ষ ড় ঢ় इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं।‡

ঌ ত থ দ ধ ন ল স इनका उच्चारण-स्थान दन्त है इस लिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

উ ঊ প ফ ব ভ ম इनका उच्चारण स्थान ओठ है; इसीसे इन्हें ओष्ठ्यवर्ण कहते हैं।

---

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† ং यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे [illegible]।

‡ ँ और ঃ इन दोनों वर्णों का प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है। जैसे [illegible]

ए ऐ, इन दो वर्णोंका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालू है इसलिये ये कण्ठ-तालव्य वर्ण हैं।

ओ औ इन दो वर्णोंका उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओठ है इस वास्ते ये कण्ठोष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओठ है ; इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं, इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण-स्थान विसर्गका उच्चारण-स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे—पुनः = पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल।

संयुक्त वर्ण।

१०। यदि एक व्यञ्जन वर्ण के बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उनको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे —क् + त् = ক্ত ; গ্ + ন্ = গ্ন ; ন্ + ত্ + র্ = ন্ত্র।

थोड़ेसे संयुक्त वर्णोंका रूप बदल जाता है। वे नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ঙ + গ = ঙ্গ, ক + ষ = ক্ষ, হ + ম = হ্ম, জ + ঞ = জ্ঞ, ষ + ণ = ষ্ণ, ত + র = ত্র, ক + র = ক্র, হ + ণ = হ্ণ, হ্ + ন = হ্ন, ন্ + ধ = ন্ধ, হ + ম = হ্ম, হ্ + ঋ = হৃ, গ + র = গ্র, শ + র = শ্র इत्यादि।

र् किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादके वर्णके माथे पर जाकर (´) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई कोई वर्णका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं। जैसे—र् + ध = र्ध। और; मार्ग, चर्म्म, निर्झर इत्यादि।

'য' द्वित्व होनेसे 'য্য', 'ষ' द्वित्व होनेसे 'ষ্ষ', 'ব' द्वित्व होनेसे 'ব্ব', और ভ द्वित्व होनेसे 'ভ্ভ', ऐसा रूप धारण करता है। য, র और ন युक्त होनेसे 'अ'कार और 'आ'कार का उच्चारण 'ऍ'कार के समान होता है; जैसे—ब्राह्म, ग्रह्ले, मान इत्यादि। 'अ'कारके साथ ঈ या ঙ युक्त होनेसे वह 'अ'-कार 'ओ'कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—প্রভাব, পর্হিত। जब 'য' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह য नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है, जैसे ব্যক্ত [illegible] इत्यादि

जब 'य' किसी वर्ण में संयुक्त होता है तो उसका उच्चार 'इय' और अन्तःस्थ 'व' किसी वर्ण में युक्त होनेसे उच्चार 'उय' ऐसा होता है; जैसे—दिव्य = दिव् + उय, दिव्य = दिव् + उय इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है :—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि।

१३। एक स्वर वर्णके साथ दूसरे स्वर वर्णके मिलनको स्वर-सन्धि कहते है।

१४। व्यञ्जन वर्णके साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्णके साथ स्वरवर्णके मिलनको व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।

१५। अ के बाद अ या आ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे शीत + अंशु = शीतांशु। यहांपर शीत शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अंशु शब्दका अ है, इसलिये इन दोनोंके मिलनेसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह [illegible] + उदय = [illegible], [illegible] + [illegible] = [illegible]।

११। आ के बाद अ अथवा आ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आ होता है, और वह आ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास। यहांपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है, इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व वर्ण "द" में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ। इसी तरह [illegible] + [illegible] = [illegible], [illegible] + [illegible] = [illegible] इत्यादि।

१२। इ के बाद ई या इ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे ई होती है और वह ई पूर्व वर्णमें मिल जाती है। जैसे मुनि + ईश = मुनीश। यहांपर मुनि में इकार के बाद ईश शब्द का ईकार है इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण मकार में मिलकर "मुनीश" पद हुआ। इसीतरह [illegible] + [illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible] इत्यादि

१३। [illegible]

[illegible]

१९। उ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऊ होता है, यह ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विधु + उदय = विधूदय। इसी तरह साधु + उक्ति = साधूक्ति। तनु + ऊर्द्ध = तनूर्द्ध। विधु + उदय = विधूदय। यहांपर विधु शब्दके ह्रस्व उ के बाद उदयका उ है; इसलिये ह्रस्व उ के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घ ऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। साधूक्ति—साधु + उक्ति = साधूक्ति। यहां पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है, इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्ववर्ण ध कारमें मिलकर "साधूक्ति" पद बना। तनूर्द्ध—तनु + ऊर्द्ध = तनूर्द्ध। यहां पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ऊ के बाद [illegible] या [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ होता है, और ऊ पूर्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे [illegible] = तनू[illegible]। यहां पर [illegible] ऊ के बाद [illegible] का [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ [illegible] पूर्ववर्ण [illegible] युक्त हुआ। इसी तरह [illegible] हुआ।

२१। [illegible] या [illegible] के बाद [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हो जाता है, और [illegible] पूर्ववर्णमें मिल जाता है जैसे [illegible]

=नगेन्द्र, महा+ईश=महेश, रमा+ईश=रमेश, धन+ईश्वर =धनेश्वर, उमा+ईश=उमेश। नग+इन्द्र=नगेन्द्र :—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रकी इ है; इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्ववर्णमें मिलकर नगेन्द्र पद बना है। धन+ईश्वर=धनेश्वर:—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा+ईश=रमेश; यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। अ या आ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होता है, और वह ओ पूर्ववर्ण में मिल जाता है। जैसे—सूर्य+उदय=सूर्योदय, नल+उदय=नलोदय, तरङ्ग+ऊर्म्मि=तरङ्गोर्म्मि, महा+उदधि=महोदधि, गङ्गा+ऊर्म्मि =गङ्गोर्म्मि। सूर्य्य+उदय=सूर्य्योदय :—यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्य्योदय पद बना। महा+उदधि= महोदधि :—यहाँ पर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्म्मि, गङ्गोर्म्मि है

२३। [illegible] या [illegible] के बाद [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे [illegible] होता है [illegible] पूर्ववर्णमें मिल जाता है और [illegible] अर्थात् [illegible] हो जाता है। जैसे [illegible]

जैसे—যদি + অপি = যদ্যপি, অতি + আহার = অত্যাহার, প্রতি + আশা = প্রত্যাশা, প্রতি + আদেশ = প্রত্যাদেশ, নদী + উচিত = নদ্যুচিত, কালী + আগার = কাল্যাগার, इत्यादि। यदि + अपि = यद्यपि ;—यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्त्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्ववर्ण दकारमें संयुक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याहार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उ वा ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्त्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু + আগত = স্বাগত, সাধু + ইচ্ছা = সাধ্বিচ্ছা, তনু + আচ্ছাদন = তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু + আদি = চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु + आगत = स्वागत ;—यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्त्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्ववर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना। इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२९। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ऋ के स्थानमें र होता है वह र पूर्व वर्णमें मिल जाता

परवर्त्ती स्वर वर्ण रकारसे मिल जाता है। जैसे—मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा, इत्यादि। मातृ + आशा = मात्राशा;—यहां पर मातृ शब्दके ऋकारके बाद आ स्वरका आकार है; इससे ऋ भिन्न स्वर वर्ण पड़नेसे रहनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और उस र और परवर्त्ती स्वर वर्ण आ का आकार पूर्व वर्ण तकारसे मिलकर "मात्राशा" पद बना।

१०। स्वरवर्ण परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ए, ऐ, ओ, औ के स्थानमें क्रम क्रमसे अय, आय, अव, आव होता है यानी ए की जगह पर अय, ऐ की जगह पर आय, ओ के स्थानमें अव, और औ के स्थानमें आव होता है; अय, आय, अव, आव के य और व पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्त्ती स्वर अ, आ में और इ, ई में मिल जाता है। जैसे—ने + अन = नयन, विनै + अक = विनायक, पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक, भो + अन = भवन, पौ + इक = पाविक। ने + अन = नयन,—यहां पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अयका यकार पूर्ववर्त्ती नकार से मिलकर "नयन" पद बना। इसी तरह विनै + अक = विनायक,—यहां पर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयका यकार पूर्ववर्ण नकारसे मिलकर "विनायक" पद बना। इसी तरह पो + अन = पवन,—यहां पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवका वकार पूर्ववर्ण प-

कारसे मिलकर "पवन" पद बना; इसीतरह भवन श्रवन भी बने हैं। नौ + इक = नाविक :—यहां पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्ववर्ण नकारसे मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन सन्धि।

३१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक् + आडम्बर = वागाडम्बर, वाक् + इन्द्रिय = वागिन्द्रिय, दिक् + अन्त = दिगन्त, त्वक + इन्द्रिय = त्वगिन्द्रिय, दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + जाल = वाग्जाल, वाक् + दान = वाग्दान, वाक् + देवी = वाग्देवी, दिक् + विदिक = दिग्विदिक, षट् + दल = षड्दल, उत् + घाटन = उद्घाटन, सत् + विद्या = सद्विद्या, जगत् + वल्लभ = जगद्वल्लभ, अप + ज = अब्ज इत्यादि।

३२। पञ्चम वर्ण पर रहनेसे वर्गके पहिले वर्ण के स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है और अकार न के बाद न या म रहे तो उस न के स्थानमें न हो जाता है। जैसे दिक + नाग = दिङ्नाग, [illegible] षण्मुख, [illegible] + मय = [illegible] पद + [illegible] = [illegible], उत् + नयन = उन्नयन, [illegible] + नीत = [illegible] इत्यादि।

२३। চ या ছ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें চ होता है। जैसे—শরৎ+চন্দ্র=শরচ্চন্দ্র, উৎ+চারণ=উচ্চারণ, উৎ+ছেদ=উচ্ছেদ, তদ্+চরণ=তচ্চরণ, তদ্+ছাত্র=তচ্ছাত্র।

२४। জ अथवा ঝ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें জ होता है। जैसे—উৎ+জ্বল=উজ্জ্বল, উৎ+ঝটিকা=উজ্ঝটিকা।

२५। ট या ঠ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ और দ্ के स्थानमें ট होता है। जैसे—উৎ+টলন=উট্টলন, তদ্+টংকার=তট্-টংকার।

२६। ড या ঢ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें ড होता है। जैसे—উৎ+ডীন=উড্ডীন, তদ্+ঢক্কা=তড্ঢক্কা, বৃহৎ+ঢক্কা=বৃহড্ঢক্কা।

२७। यदि চ या জ के बाद ন रहे तो ন के स्थान में ঞ होता है। जैसे—যাচ্+না=যাচ্ঞা, রাজ+নী=রাজ্ঞী।

२८। यदि ল परे हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, দ্ और ন্ के स्थानमें ল होता है, और ন के पूर्ववर्णमें अर्द्धविन्दु लग जाता है। जैसे [illegible]

२९ [illegible] बाद [illegible] रहे [illegible] और [illegible]

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—उत् + श्वास = उच्छ्वास, उत् + शृङ्खल = उच्छृङ्खल, जगत् + शरण्य = जगच्छरण्य, उत् + शुष्क = उच्छुष्क।

४०। द या त के बाद ह रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ध होता है। जैसे—उत् + हार = उद्धार, उत् + हत = उद्धत, उत् + हरण = उद्धरण।

४१। त के बाद ट या ठ रहनेसे त के स्थानमें ट और द के स्थानमें ड होता है। जैसे—आकृत् + ड = आकृड्ड, [illegible]।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहने से पदके अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे म के स्थान में केवल अनुस्वार होता है। जैसे—सम् + कीर्ण = सङ्कीर्ण या संकीर्ण किम् + कर = [illegible] [illegible]

४३ [illegible]

४४। स्वरवर्ण के बाद ছ रहने से ছ के स्थानमें চ্ছ होता है। जैसे—পরি+ছেদ=পরিচ্ছেদ, অব+ছেদ=অবচ্ছেদ, স+ছিদ্র=সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ+ছায়া=বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ+ছায়া=গৃহচ্ছায়া।

४५। উৎ शब्दके बाद স্থা और স্তম্ভ धातुके "স" का लोप होता है। जैसे—উৎ+স্থান=উত্থান, উৎ+স্তম্ভ=উত্তম্ভ।

४६। সম্ और পরি के बाद কৃ धातुका पद रहनेसे वह কৃ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमशः স্ और ষ্ होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম্+করণ=সংস্করণ, সম্+কৃত=সংস্কৃত, সম্+কার=সংস্কার, পরি+কার=পরিষ্কার।

४७। চ या ছ बादमें रहने से विसर्ग के स्थान में শ होता है। जैसे—মনঃ+চমৎকার=মনশ্চমৎকার, নিঃ+চয়=নিশ্চয়, শিরঃ+ছেদ=শিরশ্ছেদ, উরঃ+ছদ্=উরশ্ছদ্।

४८। ট या ঠ परे रहने से विसर्ग के स्थानमें ষ্ होता है। जैसे ধনুঃ+টঙ্কার=ধনুষ্টঙ্কার।

४९। ত या থ पर रहने से विसर्ग के स्थान में স होता है जैसे [illegible]

[illegible]

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है। जैसे—ততঃ + অধিক = ততোধিক, মনঃ + গত = মনোগত, অধঃ + গমন = অধোগমন, সদ্যঃ + জাত = সদ্যোজাত, পয়ঃ + নিধি = পয়োনিধি, যশঃ + ধন = যশোধন, মনঃ + যোগ = মনোযোগ, মনঃ + বেগ = মনোবেগ, इत्यादि।

५१। स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य व ल व ह के परे रहनेसे अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थान में र् होता है। यदि स्वर वर्ण या গ, ঘ, ঙ, জ, ঝ, ঞ, ড, ঢ, ণ, দ, ধ, ন, ব, ভ, ম और য র ল ব হ के परे रहता है तो अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थान में र होता है। पूर्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता। जैसे —অহঃ + অহ = অহরহ, প্রাতঃ + আশ = প্রাতরাশ, পুনঃ + জন্ম = পুনর্জন্ম, অন্তঃ + আত্মা = অন্তরাত্মা, অন্তঃ + দেশ = অন্তর্দেশ, পুনঃ + উক্তি = পুনরোক্তি।

५२। स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य र ल व ह परे रहने से अ आ भिन्न स्वरवर्णके बाद के विसर्ग की जगह र् होता है। जैसे—নিঃ + ভয় = নির্ভয়, বহিঃ + গত = বহির্গত, দুঃ + আত্মা = দুরাত্মা, বিঃ + উক্তি = বিরুক্তি, দুঃ + লভ = দুর্লভ।

५३। र परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र होता है, उस र का लोप होता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे—নিঃ+রোগ=নীরোগ, নিঃ+রস=নীরস, নিঃ+রব=নীরব, চক্ষুঃ+রাগ=চক্ষুরাগ।

५४। ষ परे रहने से, पूर्ववर्त्ती विसर्ग का विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ+ষ=মনষ या মনঃষ, দুঃ+ষ=দুষ, इत्यादि।

५५। समास में ক খ প ফ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से स होता है; और वही स् अगर अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ष् हो जाता है। जैसे—নিঃ+কম্প=নিষ্কম্প या নিঃকম্প; ভাঃ+কর=ভাস্কর, ভাঃকর; দুঃ+কর=দুষ্কর, দুঃকর; তেজঃ+কর=তেজস্কর, তেজঃকর; ভাঃ+পতি=ভাস্পতি, ভাঃপতি; নিঃ+ফল=নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्ग का लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অতঃ+এব=অতএব, পয়ঃ+ওদ=পয়ওদ।

५७ बंगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्ग का विकल्पसे लोप होता है। यथा [illegible]

णत्व विधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८ [illegible] के बादके दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है।

जैसे—[illegible]

५८। ऋ, र्, ष के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, ह य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—কারণ, অর্পণ, পাষাণ, নির্বাণ, রুক্মিণী, বৃংহণ, বিস্মরণ।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता। जैसे—অর্চনা কীর্তন, রসনা।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—হরিণনেত্র, দুর্নাম, দুর্নয়।

६२। क्रियाके अन्तःर का दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—করেন, ধরেন, মারেন।

६३। त, थ, द, ध, संयुक्त न "ण" नहीं होता। जैसे—প্রান্ত, ভ্রান্ত, রক্ত্।

थोड़ेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ण विशिष्ट पद है। जैसे—বাণি, মণি, বেণী, গুণ, কঙ্কণ, গণ, বিপণি, পণ, আপণ, বীণা, স্থাণু, নিপুণ, লবণ, কণিকা, বাণ, মৎকুণ, শোণ, কোণ, কল্যাণ, কণা, অণু, কাণ, ঘৃণ, বণিক इत्यादि।

६४। अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र इन वर्णोंके किसी भी परस्थित पदके बीचका दन्त्य स मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहनेपर भी वह होता है। लेकिन सात् प्रत्ययका स मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे मुमुक्षु, বক্ষ্যমান, ক্রিয়ামান, চলমান, পরিষ্কার, নিষ্পেন অধিষ্ঠান, আবিষ্কার इत्यादि।

कुछ शब्दोंका स स्वाभाविक ही मूर्द्धन्य होता है। जैसे

भात, पाहाड़, कन्दर. आषाढ़, कम्मार, कसाइ. कचे कुम्भार इत्यादि।

पद।

सारे पद पांच भागोंमें बांटे गये हैं। यथा ; (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया।

विशेष्य।

कोई चीज, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको विशेष्य कहते हैं। जैसे ;—राम. इन्दिरा ; डाब, घट ; गाइ, मनुष्य ; उत्तम, मधुर ; गमन, भोजन इत्यादि।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं। इनके जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है।

लिंग।

जिसके द्वारा पुरुष. स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है उसे लिङ्ग कहते हैं

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग।

बंगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता। फल, जल, घरण्य प्रभृति क्लीवलिङ्ग शब्दोंका रूप पुंलिङ्ग जैसा होता है।

जिन शब्दोंसे पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुंलिङ्ग कहे जाते हैं। जैसे;—मनुष्य, बालक, सिंह, अश्व इत्यादि।

जिन शब्दोंसे स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे;—स्त्री, कन्या, हरिणी, नारी, महिषी, हस्तिनी, घोटकी, कुक्कुरी इत्यादि।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एवं ज्योत्स्ना, इनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे,—সৌদামিনী, বসুমতী, যামিনী, इत्यादि।

याद रखना चाहिये कि বিদ্যুৎ, তৃষ্ণা, বীণা, সভা, রুচি, নাড়ী, বনিতা, তারা, শ্রেণী, শোভা ধূলি, নদী, নীতি, সরিৎ, বেণী, সৌদামিনী, লতা, লজ্জা, কথা, নৌকা, নাসিকা, গ্রীবা, বিভা, ভাষা, হরিদ্রা, জিহ্বা, পুষ্করিণী इत्यादि थोड़े से शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें 'अ' (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्गमें 'अ' के स्थानमें 'आ' (आकार) हो जाता है। जैसे,— [illegible]

[illegible] : [illegible] ; [illegible] ; कोकिल, कोकिला ; [illegible] ; [illegible] इत्यादि।

(ख) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें "अ" होता है, स्त्रीलिङ्गमें "अ" के स्थानमें "ई" हो जाती है। जैसे :— [illegible] इत्यादि।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें [illegible] और [illegible] होते हैं उनका स्त्रीलिङ्ग प्रायः ईकारान्त होता है यानी इनके अन्तमें "ई" लगा दी जाती है। जैसे :— [illegible] इत्यादि।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें [illegible] होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें [illegible] जैसे [illegible]

[illegible]

(ख) जिन शब्दोंके अन्तमें "अक" होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें "अक" के स्थानमें "इका" हो जाता है। जैसे:— पाठक, पाठिका, नायक, नायिका, कारक, कारिका, बालक, बालिका, गायक, गायिका इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्रायः "ई" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—सुकेश, सुकेशी, सुमुख, सुमुखी इत्यादि।

(ज) प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ई" होती है; किन्तु प्रथम, द्वितीय और तृतीय के बाद 'आ' होता है। जैसे— चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी इत्यादि और प्रथमा, द्वितीया, तृतीया।

(झ) गुणवाचक 'उ'कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ई" होती है और पहले "उ" के स्थानमें "व" होता है। जैसे,—गुरु गुर्वी, तनु, तन्वी, मृदु मृद्वी, इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें ईयस् प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्ग रूपमें अन्तमें ई हो जाता है। जैसे [illegible] [illegible] प्रेयसी इत्यादि।

[illegible] जिन शब्दोंके [illegible] उनके स्त्री- लिङ्ग [illegible] [illegible] इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें "मत्" और "वत्" होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें "ई" हो जाती है। जैसे ;—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
दयावत्	दयावान्	दयावती
ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें "ता" और "ति" प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे :—गति, मति, भक्ति, लघुता, दृढ़ता इत्यादि।

(ढ) नप्तृ, पितृ, भ्रातृ, जामातृ, देवृ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें "ऋ" होती है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें, शब्दके अन्तमें "ई" हो जाती है और "ऋ" के स्थानमें "र" हो जाता है। जैसे :—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दातृ	दाता	दात्री
विधातृ	विधाता	विधात्री
कर्तृ	कर्ता	कर्त्री

लेकिन [illegible] का [illegible] और [illegible] का [illegible] इत्यादि होता है।

[illegible] प्रकृति शब्दोंके [illegible] निङ्गमें [illegible]

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	ब्रह्माणी
सूरा	सूरटी	भव	भवानी
वरुण	वरुणानी	गरीयान्	गरीयसी
वैश्य	वैश्या	दास	दासी
शूद्र	शूद्रा	पौत्र	पौत्री
दौहित्र	दौहित्री	खुड़ा	खुड़ी

वचन ।

जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे "वचन" कहते हैं।

वचन दो प्रकारके होते हैं :—

(१) एकवचन।

(२) बहुवचन।

एकवचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है। जैसे ; बालक।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है। जैसे ; बालकेरा।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और "बालकेरा" कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं।

बहुवचन मे शब्द के [illegible]

होती है। जैसे; राम पुस्तक पड़ितेछे, शिशु चाँद देखितेछे, राजा आसितेछेन इत्यादि।

यहाँ पर पहिलेके क्रियाका "कर्त्ता" राम है; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पड़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है? शिशु, इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। "राजा" आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा; इसलिये "राजा" कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मको विभक्तियाँ के चिन्ह ये हैं [illegible] अथवा य। जैसे [illegible] पुस्तक [illegible] इत्यादि

क्रियासे क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में 'कौन' प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

श्याम हरिके धरितेछे : 'धरितेछे' क्रिया है-कौन धरितेछे ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है; इस लिये "श्याम" कर्त्ता है। श्याम क्या वा किसको पकड़ता है ? इस प्रश्नसे हरि मिलता है : इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् जिज्ञास, देओय इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—गुरु शिष्यके प्रश्न जिज्ञासिलेन, [illegible] ताहा [illegible]. [illegible] टाका दिलाम, ईश्वर मनुष्यके [illegible] दिन इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन, यहां पर 'देखाइतेछेन' क्रिया है। कि देखाइतेछेन चन्द्र, इसलिये चन्द्र एक कर्म्म है और काहाके देखाइतेछेन ? शिशुके इस लिये 'शिशुके' और एक कर्म्म हुआ। अतएव देखाइतेछेन इस [illegible] दो कर्म्म हुए। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इसलिये [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इसी तरह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके कथा बलिल, यहांपर "बलिल" क्रिया है। कि बलिल ? कथा ; इसलिये "कथा" एक कर्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए।

करण कारक।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, दाय द्वारा काठ काटितेछे, चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे, कलम द्वारा पुँथि लिखितेछे इत्यादि।

दाय द्वारा काठ काटितेछे, यहां पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे, यहां पर चक्षु द्वारा देखनेका काम पूरा होता है इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। कलम द्वारा पुँथि लिखितेछे, यहां पर कलम द्वारा पोथी लिखनेका काम पूरा होता है इसलिये कलम करण कारक हुआ।

দ্বারা', দিয়া, করিয়া, তে इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है, इस लिये ये करण कारक की विभक्तियां हैं। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—দন্ত দ্বারা চর্ব্বণ করে, নেত্র দিয়া দেখে, যষ্টি করিয়া, লাঠিতে इत्यादि।

यहांपर 'दन्त', 'नेत्र' और 'यष्टि', 'लाठि', करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे—দরিদ্রকে ধন দাও, यहां पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिन दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म होती है। जैसे—রজককে বস্ত্র [illegible] यहां पर रजक कर्म्म कारक है।

अपादान कारक।

[illegible]

रक्षित, गृहीत, उत्पन्न, अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आयत्त या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिन्ह है —হইতে। जैसे—ব্যাঘ্র হইতে ভীত হইতেছে ; বৃক্ষ হইতে পত্র পড়িতেছে, দস্যু হইতে ধন রক্ষা করিতেছে, মেঘ হইতে বৃষ্টি হইতেছে, পাপ হইতে বিরত হইবে, দুষ্ট লোক হইতে অন্তর্হিত হইতেছে, পুষ্প হইতে ফল উৎপন্ন হয় ইত্যাদি।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहांपर व्याघ्रसे भीत होनेके कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये "वृक्ष" अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, यहांपर दस्युसे धन रक्षा करनेके कारण "दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, यहांपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये "मेघ" अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइबे, यहां पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे यहांपर दुष्टलोकसे अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय यहांपर पुष्पसे फल पैदा होता है इसलिये पुष्प अपादान कारक हुआ।

[illegible] इत्यादि अपादान कारक की विभक्ति है। [illegible]

हइते भय पाइतेछे। बाड़ी हैते आसे, इत्यादि। यहाँपर “चोर”, “मनुष्य” और “बाड़ी” अपादान कारक हैं। हइते और हैते इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे—वायु सर्व्व स्थाने आछे, वृक्षे फल आछे, टेबिले बइ आछे, दुग्धे माखन आछे इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे. यहाँ पर “सर्व्व स्थाने” यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये “सर्व्व स्थाने” अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे. यहाँपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे इस लिये “वृक्षे” अधिकरण कारक हुआ। टेबिले बइ आछे यहाँ पर 'आछे' क्रिया है, कोथाय आछे? टेबिले इसलिये टेबिले अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है इसलिये दुग्धे अधिकरण कारक हुआ।

[illegible]—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं जैसे [illegible] इत्यादि।

यहाँपर घरे कोथाय या कोथाते अधिकरण कारक है।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने हो से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं;—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने मे अगर 'सम्बिषये' (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे, शिल्पकारेर शिल्पकर्म्मे नैपुण्य देखाय, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, शास्त्रे पारदर्शिता आछे, यहांपर "शिल्पकर्म्मे" और "शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण है।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—इक्षुते रस आछे, अर्थात् ऊख में रस है। दुग्धे माखन आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहां पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे गङ्गाय वास करे, यहां पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है इसलिये "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो,तो उसे 'एक देशाधिकरण' कहते हैं। जैसे —वने व्याघ्र आछे यहांपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे बन में बाघ है : बल्कि यह समझना होगा कि बन के किसी एक स्थान में बाघ है : इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं : अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हों तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, मध्याह्ने सूर्य्येर किरण प्रखर हय, तिनि तखन छिलेन ना, यखन याइबे आमिओ याइब, वर्षाय वृष्टि हय इत्यादि।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहांपर प्रत्यूषे अर्थात प्रभात काले (सबेरे) समझा जाता है ; इस लिये "प्रत्यूषे" यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्य्येर किरण प्रखर हय, यहां पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है ; तिनि तखन छिलेन ना, यहां पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहांपर 'तखन' पद कालाधिकरण है। यखन याइबे आमिओ याइब, यहांपर यखन शब्द द्वारा समय समझा जाता है, इसलिये 'यखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय यहां वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये 'वर्षा' पद कालाधिकरण है

शयन दर्शन, भोजन स्नान इत्यादि क्रिया भाव

विहित क्रिया पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं उनका नाम भावाधिकरण है। जैसे—হরির গমনে তিনি দুঃখিত হইবেন, চন্দ্রের দর্শনে আমি বড় সুখী হই, ব্রাহ্মণের ভোজনে সকলেই সন্তুষ্ট হয়, আত্মীয় বিয়োগে সকলেই শোকাকুল হয় इत्यादि।

हरिर गमने तिनि दुःखित हइबेन, यहाँ पर हरिर गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया की जरूरत होती है; नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता, इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पूरा नहीं होता; इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। चन्द्रेर दर्शने आमि बड सुखी हइ, यहाँपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले', ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता, इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। आत्मीय वियोगे सकलेई शोकाकुल हय, यहाँपर 'वियोगे' इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है, इस लिये 'वियोगे' यह पद भावाधिकरण है।

सम्बन्ध पद।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। इसका रूप र या एर है। जैसे—[illegible] बाड़ी, [illegible] [illegible], [illegible] गाछ, चन्द्रेर किरण, मधुर [illegible], [illegible] [illegible] इत्यादि।

रामेर बाड़ी, यहां पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद हैं। बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है; क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरेका अधिकार नहीं है; इसलिये "रामेर," यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे एर विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, भामेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे—

[illegible] भाई चलो।

[illegible] राम तुम आओ।

মাধব ভাল আছ ? = माधव अच्छे हो ?

ওহে হরি = ओ हरि।

ওরে চন্দ্র = अरे चन्द्र।

उपरके उदाहरणोंमें "भ्रात", "राम", "माधव" "हरि" और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, ওরে प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं। लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है, बहुवचन में नहीं होता।

जैसे

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्मति	हे दुर्मते
मति	हे मते
प्रथमा	हा प्रथमे
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्राय बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं ; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणवालों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे : हे पिता, रे दुर्मति, हे मित्र, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि ; लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे : अयि शकुन्तले दुर्गे इत्यादि।

"दुर्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में दुर्मति के समान होगा। जैसे : रे दुर्मते, हे हरे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप [illegible] उकारान्त शब्दोंके रूप "गुरो" [illegible] ऋकारान्त शब्दों के रूप

"वधु", ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः"; नकारान्त शब्दोंके रूप "राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहां विना, व्यतिरेके, व्यतीत, ओ, भिन्न इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहां इनके पहिले का पद कर्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे :—

धन विना सुख हय ना।

धन विना सुख नहीं होता।

ताहाके भिन्न काज हइबे ना।

उसके सिवाय औरसे काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "के" लगाना होता है। जैसे :

मूर्खके धिक्। तोमाके नमस्कार।

मूर्खको धिक्कार। तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ सहित प्रति समान, तुल्य, उपरि, समान इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियां लगती हैं। जैसे

[illegible]

তাহার সঙ্গে।	রামের তুল্য।
আমার প্রতি।	তোমার সমান।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे ;

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे ;

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब विद्यार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मानव	मानवेरा
	मनुष्य मनुष्यने	मनुष्य मनुष्योंने

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ম	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
করণ	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
সম্প্রদান	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लिये
অপাদান	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
অধিকরণ	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
সম্বন্ধ	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का, के, की
সম্বোধন	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

फल शब्द ।

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ত্তা	ফল	ফল সকল
কর্ম	ফল	ফল সকল
করণ	ফল দ্বারা	ফল সকল দ্বারা

ইত্যাদি।

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्रायः ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त ईकारान्त उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बंगला में बरते जाते हैं उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं।

संस्कृत	बंगला	संस्कृत	बंगला
सखि	सखा	धनिन्	धनी
पितृ	पिता	तेजस्	तेज
हड	हद्	स्रतस्	स्रत
दधिज	दधिज्	विद्वस्	विद्वान्
महत्	महान्	राजन्	राजा
पापीयस्	पापीयान्	दिश्	दिक्
मनस्	मन	यशस्	यश
गुणवत्	गुणवान्	बुद्धिमत्	बुद्धिमान्
श्रीमनस्	श्रीमनः	ज्योतिस्	ज्योतिः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		

विशेषण।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व अवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं। जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।
মিষ্ট ফল = मीठा फल।
উত্তম বালক = अच्छा बालक।
বৃদ্ধ অশ্ব = बूढ़ा घोड़ा।
মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।
পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।
লোহিত বসন = लाल कपड़ा।
সৎ লোক = भला आदमी।
বড় গাছ = बड़ा पेड़।
ছোট ছেলে = छोटा लड़का।
অলস বালক = सुस्त बालक।
পাকা আম = पक्का आम।
শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।
গরম দুগ্ধ = गरम दूध।
কাল পাথর = काला पत्थर।
বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भांति मिष्ट, दुष्ट प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएं खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उनमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे: नवीना युवती, सुन्दरी [illegible]।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे: अत्यन्त कठिन, बड़ मन्द, अति सुन्दर इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे: शीघ्र लिखियाछे, मन्द मन्द [illegible]।

सर्व्वनाम।

प्रायः कहने में एक व्यक्ति या एक वस्तु का ज़िक्र बारम्बार करना होता है; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तु का ज़िक्र न करके उनके स्थानोंमें और बदलके पद इस्तेमाल करनेका फ़ायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको 'सर्व्वनाम' कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके बन जानेपर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदको जगह "ताँहार" पद आया है, अतएव "ताँहार" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदको जगह सर्वनाम इस्तेमाल किया जाता है उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्वनामका भी वही लिङ्ग और वचन होता है; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग के भेदसे सर्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे;

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা বলিয়া মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको परम देवता कह कर मानती थी।

(२) অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী বস্তু লইয়া দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी चीज़ लेकर तेज़ीमें चले जाते हैं।

यहाँ "सीता" स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है। सुतरां "तिनि" यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक वचनान्त पद है। "अश्वगण" पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है; इसी लिये "ताहारा" यह सर्व्वनाम भी पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है।

विशेष्य पद की भाँति सर्व्वनाम पद के भी वचन पुरुष

और कारक होते हैं। विशेष पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, তাহা, তা, যিনি, যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই, উনি, ও, উহা, কে, সর্ব্ব, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর, इत्यादि।

युष्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम इत्यादि; ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से, प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत्, तद्धित और समासमें व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्व्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे,—

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
অস্মদ্	আমি	
ভবৎ	আপনি	
যুষ্মদ্	তুমি	তুই
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	
[illegible]		

অদস্	ঐ, উহা, উনি	
কিম্	কে, কি, কোন্	
সর্ব্ব	সব	

विभक्ति-योग के समय अमुक, पर, अमन, कतर प्रभृति जितने जो शब्दों में कुछ रद बदल नहीं होता अर्थात् वे ऐसे के ऐसे ही रहते हैं।

सर्व्वनाम शब्दके रूप।

अस्मद् शब्द।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	আমি	আমরা
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	আমা দ্বারা	আমাদিগের দ্বারা
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे मुझको	हमें हमको
अपादान	[illegible]	[illegible]
	मुझ से	हम से

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको

इत्यादि।

"সে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "যে" के स्थान में "যিনি"; "যাহারা" के स्थानमें "যাঁহারা", "সে" के स्थानमें "তিনি"; "তাহারা" के स्थानमें "তাঁহারা" इत्यादि शब्द व्यवहार किये जाते हैं।

और सब सर्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्वनाममें सम्बोधन नहीं होता, केवल मानक रूप होते हैं।

अव्यय।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक-भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और वचन न हो, उसको "अव्यय" कहते हैं।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं। संयोजक अव्यय ये है—এবং, ও, আর, আরও, অপিচ, কিন্তু, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বরং, সুতরাং, কেননা, কাজে, কাজের ইত্যাদি।

वियोजक अव्यय ये हैं :—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, কি, তথাপি, তথাচ, না হয়, নয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা इत्यादि।

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—আঃ, উঃ, হায়, হা, উহু, ছিছি, রাম রাম, হরি হরি इत्यादि।

प्र, परा, अप, सम्, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ, एद, इ, "उपसर्ग" कहते हैं।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया वाचक पदके पहले लग जाते हैं तब वह क्रिया-वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है। जैसे,

প্রদান = देना	আদান = लेना
গমন = जाना	আগমন = आना
অপকার = बुराई	উপকার = भलाई

क्रिया प्रकरण।

होना, करना, प्रभृतिको "क्रिया" कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको "क्रिया पद" कहते हैं। जैसे; [illegible], [illegible] इत्यादि।

भू, कृ, हस्, गम्, प्रभृतिको धातु कहते हैं। ये ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती हैं :—

(१) सकर्मक।

(२) अकर्मक।

जिन क्रियाओंके कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएं अर्थात् [illegible] प्रभृति धातुओंकी क्रियाएं अकर्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओंके कर्म नहीं होते। जैसे: [illegible] इत्यादि। यहां हसितेछे, मरियाछे ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं इस वास्ते ये अकर्मक हैं।

जिन क्रियाओंके कर्म होते हैं वह सब क्रियाएं अर्थात् [illegible] प्रभृति धातुओंकी क्रियाएं सकर्मक होती हैं क्योंकि इन सब क्रियाओंके कर्म होते हैं जैसे

ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।

ईश्वर मंगल करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম আম ভক্ষণ করিল।

रामने आम खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

বলা, দেখা, জিজ্ঞাসা, দেখান, শুনান প্রভৃতি क्रियायोंके दो कर्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे,

রাম হরকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने हरको तुम्हारी बात कह दी है।

আমি আজ ইহাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं आज इनसे इस विषयमें पूछूंगा।

পণ্ডিত বালককে পথ দেখাইতেছেন

पण्डित बालकको पथ दिखाता है।

पहिलेके उदाहरणमें "हरको" और "बात" ये दो कर्म "कहि[illegible]" क्रियाके हैं। [illegible] और "[illegible]" ये दो कर्म "[illegible]" क्रियाके हैं। [illegible] और "[illegible]" ये दो कर्म [illegible] हैं

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वर्त्तमान।

(२) अतीत।

(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल मे यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे; शिशु खेलितेछे। यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व पूर्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमशः "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे: शिशु खेलिल, शिशु खेलियाछे, शिशु खेलियाछिल।

भविष्यत् काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे: शिशु खेलिबे।

विधि, अनुज्ञा, प्रार्थना, इत्यादि क्रियायें और भी होती हैं

[illegible]

जो जाती है उसे "विधि" कहते हैं। ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता। जैसे—

গুরুজনকে ভক্তি করিও।

बाप और गुरु में भक्ति रखो।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको "अनुज्ञा" कहते हैं। जैसे,

সে দেখুক = वह देखे।

তুমি যাও = तुम जाओ।

বাড়ী যাও = घर जाओ।

চুরি করিও না = चोरी मत करना।

কার্য্যে ন্যায় ব্যবহার করিও।

काम में न्याय से काम लो।

প্রতিবাসীকে আত্মবৎ প্রীতি কর।

पड़ोसी से अपने समान प्रीति कर।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़ने को दीजिये।

यह होनेसे यह हो सकता इस तरह के ज्ञान को "सम्भावना" कहते हैं। जैसे

[illegible] यह हो सकता है।

[illegible] यह हो सकता है।

[illegible]

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा : ... पद विन्यास को "धातुरूप" कहते हैं।

वर्तमान काल।

हओया धातु।

त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
[illegible]	[illegible]	[illegible]

अतीत काल।

त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्यत् काल।

त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्तमान काल।

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
करिलाम	करिले	करिल
करियाछि	करियाछ	करियाछे
करियाछिलाम	करियाछिले	करियाछिल

क्रियापदके इन समस्तरूपों में कुछ कठिनता पड़ती है इस लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(Past Indefinite Tense)

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	[illegible]	[illegible]
	मैं [illegible]	हम [illegible]
म० पु०	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

आसन्न भूतकाल ।

(Present Perfect Tense)

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	आमि लिखियाछि	आमरा लिखियाछि
	मैं लिखा हूँ	हम लिखे हैं
म० पु०	तुमि लिखियाछ	तोमरा लिखियाछ
	तुम लिखे हो	तुम लोग लिखे हो
प्र० पु०	से लिखियाछे	ताहारा लिखियाछे
	वह लिखा है	वे लिखे हैं

भविष्यत् काल ।

Future Indefinite.

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	[illegible]	[illegible]
	मैं [illegible]	हम [illegible]
म० पु०	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
प्र० पु०	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

कभी कभी सकर्मक क्रिया से [illegible] नहीं होता। उस समय सकर्मक क्रिया अकर्मक की तरह काम करती है। जैसे

[illegible] - मैंने देखा।

[illegible] - तुमने नहीं सुना।

यहाँ "देखना" और "सुनना" क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म [illegible], वे अकर्मक के [illegible] है।

[illegible] के [illegible] नहीं होता। जैसे;

[illegible] - मैं जाता हूँ।

[illegible] - तुम लोग जाते हो।

[illegible] क्रिया का [illegible] है [illegible] नहीं है। हिन्दी में [illegible] क्रिया [illegible] है; जैसे; मैं जाता हूँ और तुम जाते हो. [illegible]

[illegible]

[illegible]

है। "तुम" इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे :

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

তুমি করিতেছ = तुम करते हो।

সে করিতেছে = वह करता है।

"आमि" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "तुमि" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यमपुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथमपुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे :—

(१) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया

(२) সে করিয়াছে = उसने किया

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया "करियाछे" में "न" जोड़ दिया गया है; किन्तु "से" प्रथमपुरुष और साधारण मनुष्य है इसलिये उसकी क्रियामें "न" नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त ।

[illegible] किया [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]

[illegible] किया [illegible]
[illegible] किया के [illegible]
[illegible] है। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है [illegible]
[illegible] है [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है

ै प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम [illegible]दन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" र "ति" प्रत्ययान्त पद प्राय ही क्रिया-वाचक विशेष्य होते । जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं। से:

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
	अन, ति	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
	अन, ति	[illegible]	[illegible]
	अन, ति	करण, कृति	करना, काम
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	मनना, मति	मानना, मति
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible] करनेका काम
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	अन, ति	[illegible]	[illegible]नेका काम

धातुके [illegible]

होता है। जिसके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्रायः ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি + স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बांधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পীত	जो पिया गया है।
বি + ধা	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "ता" (तृच्), "ई" (णिन्) "अक" (णक), "अन" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य अतीत कालमें "त" (क्त) लगाया जाता है। जैसे:

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
[illegible]	त (क्त)	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो भय करे।
[illegible]	त	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो ग्रहण करे।
[illegible]	त	[illegible]	जो रहे।
[illegible]	इ (क्त)	[illegible]	जो स्थिर रहे।
[illegible]	ई	[illegible]	जो हो।
[illegible]	ई	[illegible]	जो दान करे।
[illegible]	ई	[illegible]	जो [illegible] करे।
[illegible]	ई	[illegible]	जो [illegible] करे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
ग्रह	अक	ग्राहक	जो ग्रहण करे।
गै	अक	गायक	जो गान करे।
हन	अक	घातक	जो मारे।
दृश	अक	दर्शक	जो देखे।
नृत	अक	नर्तक	जो नाचे।
दा	अक	दायक	जो दान करे।
शी	अक	शायक	जो सोवे।
रुध्	अक	रोधक	जो रोध करे।
स्तु	अक	स्तावक	जो स्तव करे।
भू	अक	भावक	जो हो।
हृ	अक	हारक	जो हरण करे।
छिद	अक	छेदक	जो काटे।
गम	त (क्त)	गत	जो बीत गया।
श्रम	त	श्रान्त	थका हुआ।
जन	त	जात	पैदा हुआ।
भू	त	भूत	जो हुआ है।
छिद	त	छिन्न	छेदा हुआ।
मद	त	मत्त	मतवाला।
	त	मृत	जो मर गया।

धातुके उपर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते है वे सब धातु कर्मकारक के विशेषण होते है और भविष्यत कालका प्रकाश करते है। जैसे

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जाहा शुना जाय।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जो सुना जाय।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जाहा लओया जाय।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिया जाय।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जेखाने जाओया जाय।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जाहा खाओया जाय।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्तव्य, करणीय, कार्य	जाहा करा जाय।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्तव्य, करणीय, कार्य	जो करा जाय, करने योग्य।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जाहा पान करा जाय।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य।

तद्धित।

शब्दके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययको जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं।

हिन्दीमें भी पांच प्रकारके तद्धित होते हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसके बनाते समय कहीं "अ" के स्थान में "आ" कर देते हैं। जैसे, "संसार" से सांसारिक।

कहीं "इ" के स्थान में "ऐ" कर देते हैं जैसे शिव से "शैव" "इतिहास" से "ऐतिहासिक"।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं। जैसे, "कुमित्रा" से "कौमित्रेय" "कुन्ती" से "कौन्तेय", इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं। जैसे, रोटी-वाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा।

(३) भाववाचक। ये "ता" या "त्व" "आई" आदि लगाने से बनते हैं। जैसे, मूर्खता, शीघ्रता, चतुरता, गुरुता, गौरव, दीर्घत्व, महत्व गुरुत्व, भलाई।

(४) गुण वाचक। ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगाने से बनते हैं। जैसे, बलवान, धनवान, गुणदायक, सुखदायक, बुद्धिमान इत्यादि।

(५) ऊनवाचक। इनसे लघुता पाई जाती है। खाटसे खटिया।

यह हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयको समझा चुके हैं। हिन्दी जानने वालों को यही सुभीता थी कि हिन्दी जाननेवाले अल्प परिश्रम से बंगला व्याकरणानुसार तद्धित को आसानी से समझ सकें।

शब्दके उत्तर अपत्यादि अर्थ में इ "एय" "य" "आयन", "ईय", इक", "अ", "ईन" और "क प्रत्यय लगाये जाते हैं।

अपत्यार्थमें	विकारार्थमें	सम्बन्धविशेषमें	भावार्थमें	कर्त्तृ वा कर्मार्थमें
दाशरथि	ऐन्द्र	[illegible]	यौवन	[illegible]
भागिनेय	राजत	शारीरिक	शैशव	[illegible]
[illegible]	[illegible]	पौर	लाघव	[illegible]
पाण्डव		[illegible]	[illegible]	पैतृक
माधव		[illegible]		

विशेष्य शब्द के उत्तर भावार्थ में "त्व", "ता" और "इमन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे

शब्द	त्व	ता	इमन्
गुरु	गुरुत्व	गुरुता	गरिमा
महत्	महत्त्व	महत्ता	महिमा
नील	नीलत्व	नीलता	नीलिमा

शब्दके उत्तर "है"(अस्ति) इस पद के प्रगट करनेके लिये "मत्", "वत्", "विन्" और "इन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे।

मत्	वत्	विन्	इन्
बुद्धिमान्	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्रीमान्	[illegible]	[illegible]	[illegible]
हनुमान्	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

দ্বিতীয়	दूसरा	ঊনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
তৃতীয়	तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
চতুর্থ	चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
পঞ্চম	पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
ষষ্ঠ	छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
সপ্তম	सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
অষ্টম	आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
নবম	नवाँ	নবতিতম	नब्बेवाँ
দশম	दसवाँ	শততম	सौवाँ
একাদশ	ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ
দ্বাদশ	बारहवाँ		
ত্রয়োদশ	तेरहवाँ		

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थ में लिये "तर" "तम" "इष्ठ" और "ईयस" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे;

শব্দ	তর	তম	ইষ্ঠ	ঈয়স্
গুরু	গুরুতর	গুরুতম	গরিষ্ঠ	গরীয়ান্
অল্প	অল্পতর	অল্পতম	অল্পিষ্ঠ	অল্পীয়ান্
প্রশস্য	প্রশস্যতর	প্রশস্যতম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধ	বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষীয়ান্

शब्दके बाद गुणार्थ प्रगट करनेके लिये "वत्" और "मय" लगाते हैं जैसे

জলবৎ　　जलके समान

গুরুবৎ　　गुरुके समान

অধ্যাপকবৎ　　अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, দ্বিধা, ত্রিধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, স্বর্ণময়, জলময়, কাষ্ঠময় इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, সর্ব্বদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "ত্র" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; সর্ব্বত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद अकर्म अर्थमें "तन" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; পূর্ব্বতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में "চিৎ" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के वि- को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग "समास" कहते हैं और इन के योग से जो शब्द बनता उसे सामासिक शब्द कहते हैं जैसे [illegible]

दो पृथक पदोंको "गङ्गा जल" इस तरह एक पद बना कर काम में ला सकते हैं। अग्नि, जल व वायु—इन तीनोंको एक बना कर "अग्नि जल वायु" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। राजा व पुरुष इन दोनों पदों को "राजपुरुष" इस भांति एक करके प्रयोग कर सकते हैं। कई शब्दोंको इस भांति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पांच प्रकार का होता है द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव।

किसीने समास छः प्रकार का माना है। इनमें इसके सिवाय 'द्विगु' समास और माना है।

द्वन्द्व।

द्वन्द्व उसे कहते हैं जिसमें कई पदोंके बीच "और" (व) के लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे,

[illegible]

[illegible]

तत्पुरुष।

[illegible]

कर्मपद के साथ जो समास होते हैं उसे द्वितीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे:

[illegible]

[illegible]

करण पदके साथ जो समास होते हैं उसे तृतीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्प्रदान पदके साथ जो समास होते हैं उसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

अपादान पद के साथ जो समास होते हैं उसे पञ्चमी तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होते हैं उसको षष्ठी तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे

स्वर्गे गत = स्वर्गगत ।

हीन, ऊन प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे ;-

ज्ञान द्वारा हीन = ज्ञानहीन ।

विद्या द्वारा शून्य = विद्याशून्य ।

कर्म्मधारय ।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे कर्म्मधारय समास कहते हैं। जैसे,

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun) का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है। जैसे ;

परम + आत्मा = परमात्मा । महा + राज = महाराज

परम + ईश्वर = परमेश्वर । सत् + कर्म्म = सत्कर्म्म ।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदों से समास हुई है परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है। विशेषण प पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने प्रधा रूपसे प्रकाश पाया है इस इसी कारण से इसे "कर्मधारय समास कहते हैं

वहुव्रीहि।

वहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो। इस की परिभाषा इस भाँति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तो उसे वहुव्रीहि समास कहते हैं।

वहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे; क्षीण-काय, यहाँ क्षीण और काय इन दो पदों में समास हुई है। क्षीण विशेषण और काय विशेष्य है; किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक पृथक भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है; अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय इस पदसे यदि कृश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी, क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

... यहाँ भी ... पद विशेष्य हैं। उसका अर्थ

चाका या पहिया है, पाণি पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों की समास होने से চক্রপাণি यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुब्रीहि समास है और চক্রপাণি पद विशेष्य पद है।

इस समास में যার, যাতে, যা, যাহা इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। যে या যাহা प्राय: व्यवहृत नहीं होते। जैसे :

পীত অম্বর যার, সে পীতাম্বর অর্থাৎ কৃষ্ণ।
বৃহৎ কায যার, সে বৃহৎকায।
জিত ইন্দ্রিয যাহা কর্তৃক, সে জিতেন্দ্রিয।
স্বচ্ছ তোয আছে যাতে, সে স্বচ্ছতোয।
পাণিতে চক্র যার, সে চক্রপাণি।
নষ্ট মতি যার, সে নষ্টমতি।
মহৎ আশয যার, সে মহাশয।
ন অন্ত যার, সে অনন্ত।
ন আদি যার, সে অনাদি।

नोट (१) बहुब्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् पहिले होनेसे "महत्" की जगह महा हो जाता जैसे,

[illegible]

२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद …ग का विशेषण हो तो वह पुंलिङ्ग की भाँति …ता है। जैसे:

[illegible]

[illegible]

…हाँ "रात्रि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका …ण भी स्त्रीलिङ्ग है; किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा …न होनेपर भी पुंलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। …भाँति "स्थिरा" का "स्थिर" हो गया।

३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने …"न" के स्थान में "अन्" हो जाता है लेकिन "न" के बाद …वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

নিঃ নাই দয়া যার, সে নির্দয়।

নিঃ নাই লজ্জা যার, সে নির্লজ্জ।

पहिले उदाहरणमें "दया" शब्द के अन्तमें "आ" है लेकिन समास होने से "आ" का "अ" हो गया यानी "दया" का "दय" हो गया। इसी भांति और समझ लो।

(५) समास के पूर्व्वपद के "नकारान्त" होनेपर "नकार" का लोप हो जाता है। जैसे,

রাজন্-পুত্র = রাজপুত্র।

আত্মন্ কৃত = আত্মকৃত।

समास में युष्मद् और अस्मद् शब्द यदि पहले आवें, तो एक बचनमें उनके स्थानमें क्रमश: "त्वत्" और "मत्" हो जाते हैं। जैसे,

তোমার কৃত = ত্বৎকৃত।

আমার পুত্র = মৎপুত্র।

अव्ययीभाव।

अव्यय पद पहले बैठने पर जिसका समास हो उसको अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे

কূলের সমীপে = উপকূল।

দিন দিন = প্রতিদিন।

ভিক্ষার অভাব = দুর্ভিক্ষ।

[illegible] অভাব = [illegible]।

বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি।

[illegible] সদৃশ = উপ[illegible]।

বনের সদৃশ = উপবন।

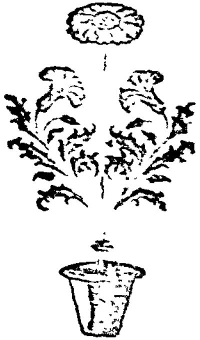

वाक्य रचना।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे,

(१) [illegible]।

(२) [illegible]।

(३) [illegible]।

(४) [illegible]।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करने को 'वाक्यरचना' कहते हैं।

वाक्य रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रक्खा जाता है। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(२) { तुमि खाइतेछ
तोमरा खाइतेछ

(३) { से खाइतेछे
ताहारा खाइतेछे

इनमें एक स्थलमें "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है, किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरेमें "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन है, किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष है; इनकी क्रिया "खाइतेछि" है और "तुमि" और "तोमरा" मध्यम पुरुष है, इनकी [illegible]

नोट (२). जिन वाक्यमें उत्तम और मध्यमपुरुष किंवा प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों उन वाक्यमें उत्तम पुरुष की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे,

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नोट ([illegible]) जहां प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों वहां [illegible] की क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे,

[illegible]
[illegible]

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्तृपद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা যাইব আমি ও তাহারা দেখিয়াছি, इस भांति के वाक्य नहीं हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी।

क्रिया के सकर्मक या द्विकर्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्मपद बैठेगा। जैसे,

আমি চাঁদকে দেখিলাম।

তাহারা পুস্তক পড়িয়াছে।

গুরু ছাত্রকে পুস্তক দান করিয়াছেন।

यहाँ [illegible] कर्म है और [illegible] क्रिया [illegible] है। [illegible] पुस्तक [illegible] है और [illegible] क्रिया [illegible] [illegible] 'छात्रके' और 'पुस्तक' [illegible] [illegible] [illegible]।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी; असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक होगा और [illegible] [illegible] करण [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है। जैसे ;

सुशीला बालिका।

बुद्धिमान बालक।

बहुफली वृक्ष।

पहले उदाहरण में "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "बालिका" के पहले बैठा है। इसी भांति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़नेवाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे ;

महामान्य हरिहर्ष राम।

महाराणी स्वर्णमयी प्रजा [illegible]।

यहां "महान" शब्द के "महाराज" और "हरिहर" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में "और" या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। इसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बैठता है ; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है। जैसे :

[illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ... यदि ... सम्बन्धवाचक ... [illegible] ... आदि हो जाते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नियमानुसार [illegible] जिन्हें [illegible] ... [illegible] किये जाते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध हो) बैठाया जाता है। जैसे :

ईश्वरेर महिमा।

दुःखीर जीर्ण कुटीर।

यहाँ "ईश्वरेर" पद सम्बन्धपद है; क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है।

करण पद कर्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है। जैसे.

तिनि छुरि द्वारा एइ वृक्षटि छेदन करिलेन।

हरि यष्टि द्वारा वृक्ष हइते फल पाडिल।

यहाँ "छुरि द्वारा" यह करण पद है यह "तिनि" कर्तृपद के बाद और "वृक्षटि" कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे;

तिनि कुसङ्ग हइते विरत हइयाछेन।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है कभी कभी बाद में बैठता है. जैसे

[illegible]

[illegible]

वक्तव्य।

इसमें मोटी तरह बंगला व्याकरण में प्रवेश लाभ करने की राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बंगला भाषा सीखने में सुलभता होगी। जिन्हें बंगला व्याकरण के अन्यान्य विषय जानने हों, वे प्रकृत बंगला व्याकरण देखें।

प्रथम भाग

समाप्त

हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।

अनुवाद विषय ।

पहिला पाठ ।

ছিল = था

সেকালের = वहाँका

রাজার = राजाका

তাঁর = उनका

তত = उतना

গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा

অল্প = थोर

[illegible] = करते थे

[illegible] = इतना

[illegible] = होनेका

সেই = उसी

যত = जितने

ছিলেন = थे

সকলের চেয়ে = सबकीअपेक्षा

পণ্ডিতের = पण्डितोंके

[illegible] = हैं उनमें

[illegible] = होनेपर

[illegible] = कैसिक

[illegible] = कोई

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়াও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজারাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান ছিলেন, সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,— [illegible] তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

সীতা।

[illegible]

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे। उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहने वाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = वही.	কোন = कोई
শুধু = केवल	উহাকে = उसको
কি = क्या	হটাইতে = हटाते
যেমন = जैसा	পারেন = सकता
তেমন = वैसा	নাই = नहीं
কোন = किसी	নয় = नहीं
পড়িলে = पढ़नेसे	সেকালে = उस समय
বড় বড় = बड़े बड़े	[illegible] = अनुसार, समान
[illegible] = प्रकार	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = बैठते थे
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible] थे
[illegible] = उनके	[illegible] = और
[illegible] = नहीं	[illegible] = रहने [illegible]
[illegible] = [illegible]	

(২)

শুধু কি তাই—তিনি যেমন বিদ্বান্, তেমনি বুদ্ধিমান্ ছিলেন। কোন বিপদে আপদে পড়িলে অনেক বড় বড় রাজাও তাঁর পরামর্শ নিতেন। বীরত্বও তাঁর কম ছিল না। যুদ্ধ করিয়া কোন রাজাই তাঁকে হটাইতে পারেন নাই।

কেবল তাই নয়—সেকালে তাঁর মত ধার্ম্মিক মুনিঋষিও খুব কম ছিল। রাজা হইয়াও তিনি ভোগবিলাসী ছিলেন না। যখন রাজাসনে বসিতেন, কেবল তখন রাজপোষাক পরিতেন। আর সব সময় মুনিঋষির ন্যায় থাকিতেন। সর্ব্বদা জপ, তপ, ব্রত নিয়ম পালন করিতেন।

(२)

केवल इतना ही क्या—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धिमान भी थे। किसी विपत्ति आफतमें पड़ने पर बहुतसे बड़े बड़े राजा भी उनकी सलाह लेते थे। वीरता भी उनकी कम न थी। लड़कर कोई राजा भी उनको हटा नहीं सकता था।

केवल इतना ही नहीं उस समयमें उनके समान धार्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे। राजा होकर भी वे भोग विलासी नहीं थे। वे जब राज आसन पर बैठते थे सिर्फ, उस समय राजाकी पोशाक पहिनते थे और सब समय ऋषिमुनिकी भांति रहते थे। सदा जप तप, व्रत, नियम, पालन करते थे

तीसरा पाठ।

উদ্দেশে = [illegible]	পুঁথি = पुस्तक
কাজ = काम	আবার = और, फिर, दूसरी बार
কতই = कितना ही	থাকিয়া = रहकर
আমোদ = प्रसन्नता	তাহা = वह
হইত = होती थी	করিয়াছিলেন = किया था
তিনি = वे, वह	অন্য = और भी
হইয়াও = होकर भी	পাকা = पक्के
বলিয়া = इससे, इस कारणसे	খেলোয়াড় = खिलाड़ी
লোকে = मनुष्य, सर्वसाधारण लोग	তলোয়ার = तलवार
বলিত = कहते थे	ঘুরাইয়া = घुमाकर

---

(৩)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত। তিনি রাজা হইয়াও মুনিঋষির মত কাজ করিতেন বলিয়া,লোকে তাঁকে [illegible] আবার ধনুর্বেদে [illegible] হইলেও, তিনি তাহা [illegible] করিতেন, অন্য কোন [illegible] ছিলেন, [illegible]

(२)

ईश्वरके लिये सब काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषिमुनिकी भांति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते हैं। राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्मके काममें सन्यासी थे। घरमें रह कर सन्यास अवलम्बन होनेपर भी उन्होंने उसको प्रकाश किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे। वे बड़े पक्के ज्ञानी थे, क्योंकि उन्होंने एक हाथमें धर्मकी और दूसरे हाथमें कर्मकी तलवार घुमाकर सभीको विस्मित किया था।

चौथा पाठ।

[illegible] = दयालु [illegible] = बड़ा सज्जन है
[illegible] = घरमें
[illegible] = दिवस [illegible] = छिपे
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

সেই = वही　　কিছু = कुछ
কে = कौन　　হইল = हुआ

(৪)

জনকের দয়ার সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান খয়রাত, রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে?

এমন যে রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জন-পরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুরোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন; কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

(४)

जनककी दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव आमोद, आह्लाद (होता था)। और दान, दानख्य रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता। उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था)?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का बाला नहीं (था)। प्रजा, अपने पराये और राजकर्मचारी सबोंका मुंह मलिन रहता था। रानी सन्तानके लिये व्याकुल रहती थी। सभोंका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनके अनुरोधसे याग यज्ञ किये; परन्तु किससे भी कुछ न हुआ।

पाँचवाँ पाठ।

করিবেন = करेंगे	বাগানে = बागमें
জায়গা = जगह	ফুটিল = खिले, फूटे
ঠিক = ठीक	অলি = भौंरा
হইল = हुई	তুলিবার = तोड़नेके लिये, चुननेके लिये
জিনিষ-পত্র = चीज वस्तु	গেলেন = गये
জোগাড় = जोगाड़, जुटाव	মাঝে = बीचमें
হইতে লাগিল = होने लगा	সরোবর = तालाब
পোহাইল = सवेरा होना, बीतना	তিন = तीन
কাক = कौआ	পাড়ে = तीर, किनारेपर
কোকিল = कोयल	মাঠ = मैदान, चरागाह
ডাকিয়া উঠিল = पुकार उठी, बोल उठी	কাঁদিয়া পড়িলেন = रो पड़े

(৫)

আবার সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরোধ করিল। রাজর্ষি জনক আবার যজ্ঞ করিবেন। যজ্ঞের জায়গা ঠিক হইল, জিনিষ পত্র যোগাড় হইতে লাগিল।

একদিন রাত পোহাইল, কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠিল, বাগানে ফুল ফুটিল, অলি গুন গুন করিল। ক্রমে ফুল তুলিবার সময় হইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন। বাগানের মাঝে সরোবর, তাহাতে স্ফটিকের মত জল। সরোবরের [illegible] আকাশ

খানি লাল করিয়া সরোবরের জলে ফেলিয়াছে। সরোবরের তিন পাড়ে সুন্দর বাগান, এক পাড়ে খোলা মাঠ। রাজর্ষি ফুল তুলিতে তুলিতে মাঠে আসিয়া পড়িলেন।

(५)

फिर सभोंने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध किया। राजर्षि जनक फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह ठीक हुई, थोड़ सब जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे. कोयल बोल उठें, बागमें फूल खिले. भौंर गुन् गुन् गाने लगे। धीरे धीरे फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बागमें गये। बागके बीचमें तालाब (है) उसमें स्फटिकके समान जल (है)। सूर्यदेवकी सुनहरी किरणें आकाशको लाल करके तालाबके पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग है एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ।

[illegible] = पिठ   [illegible] = तुरन्त फूटे हुए.
[illegible] = [illegible]   तुरन्त खिले हुए
[illegible]   [illegible]
[illegible]   [illegible]
[illegible]   [illegible]
[illegible]

করা চাই = করনা চাহিয়ে	ছাড়িলেন = ছোড় দিয়া
লাঙ্গল = হল	তাড়াতাড়ি = জল্দীসে
আসিল = আয়া	ছুটিয়া গেলেন = দৌড়কর গয়ে
গরু = বৈল	কোলে = গোদমেঁ
যেন = জৈসে, মানো	তুলিয়া নিলেন = উঠা লিয়া
আলোকিত = রৌশন	সাড়া পড়িল = কোলাহল মচা
উঠিল = উঠা	অনায়াস = বিনা পরিশ্রম,
কালে = কানমেঁ	যত্নাযত্ন

---

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহার কোন জায়গা উঁচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল, রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলের ফালে সদ্যফোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ! জোছনার মত রঙ, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল [illegible]। রাজপুরীতে মহা [illegible] সাড়া [illegible]। [illegible]
[illegible]

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें ढेह पड़े (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये. हल आया, बैल आये, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानो आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है)! लड़की कैसी लड़की (है) मानो आकाशका चन्द्रमा! चांदनीसा रंग, मक्खन का शरीर. लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। बहादुरोंने बड़ा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

[illegible] = [illegible] हैं, [illegible] — [illegible] = हडों [illegible]

[illegible] = [illegible] — [illegible] = [illegible]

[illegible] = हे [illegible] — [illegible] = नदर,

[illegible] — [illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

লতা পাতা = লীরনে বন্দনবার সাজাইল = সজায়া
ত্রুটি = কমী ভূষিত রহিল = ভূষিত রহা

(৭)

সত্যই রাজর্ষির বড় আনন্দ হইল। আনন্দে মেয়ে নিয়ে রাজা অন্দরে গেলেন। "ভগবানের দান" এই বলিয়া মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন। মেয়ে পাইয়া রাণীর আহ্লাদের সীমা নাই, সে কি যত্ন! সে কি আদর! যত যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের যত্নের বুঝি ত্রুটি রহিল।

রাজপুরী লতা পাতা পুষ্প পতাকায় সাজান হইল। ফটকের চূড়ায় চূড়ায় বাদ্য বাজিয়া উঠিল। রাজ্যময় উৎসবের ঘোষণা হইল। দেবালয়ে পূজা অর্চনার ধূম পড়িল। রাজপুরী আনন্দময়ী হইয়া উঠিল। রাজার সুখে প্রজার সুখ। প্রজারাও আমোদে মাতিল। আপন আপন ঘর বাড়ী সাজাইল। সাত রাত পর্য্যন্ত নগর আলোকমালায় ভূষিত হইল।

(৮)

সচমুচ রাজর্ষিকো বড়া আনন্দ হুআ। আনন্দমেঁ লড়কীকো লেকর রাজা অন্দরমেঁ গয়ে। "ঈশ্বরকা দান" যহ কহ কর লড়কী রানী [illegible] দী। লড়কী পাকর রানীকা প্রসন্নতা [illegible] হমা যত্ন! যহ কৈসা আদর [illegible] জিতনা যত্ন করতী থী, জিতনা হী আদর [illegible] মালুম [illegible]

राजपुरी तोरन बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई। फाटकोंके ऊपर ऊपर (नक्कारखानोंमें) बाजे बज उठे। राज्य-भरके हलकेको घोषणा हुई। देवालयोंमें पूजा चढ़ाई गयी। धूम पड़ी। राजपुरी आनन्दमयी हो उठी। राजाके मुखसे प्रकाश हुआ (है)। प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई). अपने अपने घर द्वार सजाये। आज रात तक नगर रोशनीसे [illegible] मुदित हुआ।

साठवाँ पाठ।

[illegible] = हाथी	[illegible] [illegible]
[illegible] = बाधि	[illegible] = रही गई
[illegible] = किना बखानके	[illegible] = टप टपकर
[illegible]	[illegible] = आने लगे
[illegible] = हाथ जोड़कर	[illegible] = सिपाहियोंके झुण्ड
[illegible] = इच्छा	[illegible] = पड़े।
[illegible] = चली गई	[illegible] = हैं जाइके
[illegible] = शान, दरबार	[illegible] = खिलखी खिलखी

[illegible]

[illegible]

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশ রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যার যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि माणिक्य और बहुत सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन दुःखियोंको आशासे बाहर धन दिया। सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते करते अपने अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभ का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्यकी बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दलके दल

आने लगे। जितेन्द्रि साथ अतिथिगण भी आने लगे। इनके इ[illegible] ब्राह्मण पण्डित आदि, लड़की देखो, और आकर आशीर्वा[illegible] करके चले गये। इसके बाद राजा आदि--लड़की देखी [illegible] जिसको जिसको जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे[illegible] चले गये।

नयाँ पाठ।

পর = बाद	পাওয়া যাইবে = पायी जायगी, पाया जायगा
চাহিল = चाहा	কেন = क्यों
দিয়া = देकर	শোনে = सुने
মোটে = बिना कृपा	আগে = आगे
চোখ = आँख	ফুরায় = पूरा होना
না জানি = नहीं जानता	হইতে = से
আরও = और भी	আসেন = आती थीं
কত = कितना (बहुत)	না হইলে = नहीं तो,न होनेस[illegible]
মানুষের = मनुष्यका	
ইনি = ये	

(৯)

তাহার পর প্রভাত। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে [illegible] দেখিল [illegible] চাহিল মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে [illegible] চলিল [illegible] হইল তখন অন্তঃপুরে বাহিরে কোলে [illegible] কাঁদিতে কাঁদিতে ফুরিতেছে [illegible] [illegible] চলিল [illegible]

মেয়েরা শতে শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা,রূপ কি রূপ—যেন ফোটা পদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ, পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর! আহা! এখনই এত রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মানুষের কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেব কন্যা। না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপের কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে, একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(৫)

उसके बाद प्रजा। दलकी दल प्रजाने आकर लड़की देखी; जिसके मनमें जो आया (मनमें जो आया) लड़कीको देकर अपने घर चला गया। राजसभामें लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई, वहाँ मुनियोंकी स्त्रियां, ऋषियोंकी स्त्रियां, मुनिकी कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियां आईं—लड़की देखी—रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप, मानो खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुँह, कमलकी आँखें, मक्खन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप(है) बड़ी होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। मनुष्यका इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चय ही ये कोई देवकन्या हैं। नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें क्यों पाई जातीं? इनके रूपकी बात जो सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आता

था, एक दम जाता था, रात भरके मोन दम नहीं होते थे।

दसवाँ पाठ।

[illegible] = समान | [illegible] = धकधकर
[illegible] = होते न होते | [illegible] = धीरे धीरे
[illegible] = वास्ते, कारणसे | [illegible] = ढेर ढेर
[illegible] = रचा | [illegible] = चलना
[illegible] = कोई कोई | [illegible] = महूके मुहकिटोड़ साथ
[illegible] = दुकारते थे | [illegible] = छिनने
[illegible] = छिलका छूटना | [illegible] = साथ दिया।
[illegible] = ठेंढकी

---

(১০)

[illegible]

(१०)

यह सब आमोद समाप्त होने न होने थे। फिर रामचन्द्रके लालनपालनका प्रबन्ध आरम्भ हुआ। उनके कानमें पाई थी इसलिये लड़कीका नाम रक्खा सीता। जनककी कन्या होनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बड़ी होने लगीं। मा बापकी गोद छोड़कर घुटनों चलने लगीं। घुटनन चलना छोड़कर, मा बापकी उंगली पकड़ धीरे धीरे पांव पांव (डगते डगते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लड़के लड़कियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगीं।

ग्यारहवाँ पाठ।

[illegible] = बहुत, बड़ा	[illegible] = होनेपर
[illegible] = वे	[illegible] = दिन
[illegible] = मिश्रत	[illegible] = काम धन्धा
[illegible] = दाम	[illegible] = जितना हो, बहुत कुछ
[illegible] = सदा	[illegible] = जाने दो।
[illegible] = कभी	[illegible] = पहला
[illegible] = भिखमंगा दरबार	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible]
[illegible] = कभी	

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায়। যাগ যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ের সঙ্গে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান, কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন। উপকথাচ্ছলে ও গল্পে শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের [illegible], নিয়ম কানুনের ব্যবস্থা করেন। [illegible] সহিত শিক্ষার সকল ব্যাপার পালন করিয়া বড়ই যেন সুখ পান।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा सभा में जाते (तो) उनको लड़की भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (भी)—लड़की उनके पास ही बैठती। वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। इसके अतिरिक्त और सबक सिखाने लिये कितनी [illegible] व्यवस्था करते [illegible]

[illegible]

সব = ছব
যখনই = জভী
তখনই = তভী
প্রেমাপ্লুত = প্রেমমগ্নী
ভাসিয় = ভাসায়ী
এই = য়হী
যমুনাতীরে = যমুনাকিনারী
কাহিনী = কহানী
বলেন = কহতে হৈঁ
মনে প্রাণে = জী প্রাণ লগাকে
এবং = ঔর
লজ্জা = লাজ
তাঁহাদিগকে ধরিয়া = উন্হেঁ
উঠাকে
মিটে = মিটনা
বাসনা = অভিলাষা
হইয়া পড়েন = হো পড়তী থী

(১২)

প্রভু এই নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করিয়াই ক্ষান্ত হন না, যখনই সময় পান তখনই প্রেমাপ্লুত ভাবে কৃষ্ণকে নাচাইতেন, অর্থাৎ, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ নারী যমুনার কীর্ত্তন করেন। যাঁহারা মনে প্রাণে এই সব শোনেন এবং সেই সব নারী চরিত্রের অনুকরণ করেন তাঁহারা জীবনের লক্ষ্য বলিয়া ঠিক করেন।

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनकी व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे, जभी समय पाते थे तभी स्नेहभरी भाषामें लड़कीको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे वही सब सुनती थीं और उन्हीं सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थीं।

और सुनती थीं तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुनने में सीताका बड़ा ही आग्रह (था)। राजसभामें मुनि ऋषि आने पर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वहाँ सुनकर उनका जी न भरता था। फिर बहाना करके पिताके मुँह से सुना चाहती थीं। पिताके मुँहसे तपोवनकी पवित्र मीठी बातें सुनते सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थीं।

तेरहवाँ पाठ।

ছাড়িয়া = छोड़कर	সেখানে = वहां
থাকিতে = रहने	ছানাদের = बच्चों का
পিছনে = पीछे	ধরিয়া = पकड़कर
সাজি = फूलका चंगेर	আদর করিলেন = प्यार किया
[illegible] = चलती थी	দুটি = दो
[illegible] = कटता था	[illegible] = कोमल करके
[illegible] = पहनते थे	[illegible] = पत्ता
[illegible] = [illegible]	[illegible] = लाकर

খান = खाती थी　　খাওয়াইলেন = खिलाया
ততক্ষণ = उतनी देर　　কাছে = पास
বিশেষ = जरूरी　　একটু = कुछ, थोड़ा
কাজে = काममें

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারেন না। রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন। জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দূর্ব্বা, চন্দন নিয়ে খেলার পূজায় বসিয়া যান। রাজর্ষি শাস্ত্র পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন। জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস। রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না। তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গলা ধরিয়া একটু আদর করিলেন, দুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন।

(१३)

सीता अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चँगेर लेकर चलती थीं। जनक पूजा करने बैठते थे सीता भी फूल दूर्वा चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थीं। राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे सीता भी अपनी पोथी खोलकर पढ़ने बैठती थीं। जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे। [illegible]

जिसे सुनकर बालकने उसको पकड़ लिया, उसके पास नहीं रहने सकता था। इस समय मैना आदमी सारी —बनी हरिनके बच्चेका गाल धरकर प्यार करती। वो [illegible] पत्तो लाकर उसको खिलाती थी।

चौदहवाँ पाठ।

[illegible] = हिरनके निकट, [illegible] = किसीके भी
हिरनके [illegible] (बहुवचन बच्चे)
[illegible] = पड़े रहते थे [illegible]
[illegible] = थोड़ा इसी तरह [illegible] बना
[illegible] — सिर [illegible] — नहीं मिलती थी
[illegible] = बाहुँना [illegible] सगह
[illegible] — गहने कपड़े [illegible] = कष्ट जानेपर
[illegible] — खोलकर [illegible] — फिरनेमें
[illegible] — बैठने [illegible] = माना किया, बाधा दिया
[illegible] — जितना भी
[illegible] = हरिनके [illegible] — सुखी
बहौनी

(२८)

[illegible]

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করেন—নিয়েই চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না। হরিণশিশুগুলিকে দু'হাতে কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক বালিকাদিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপোবনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখনে চলে—সীতানে ভী জিদ পকড় লী—'পিতা' মৈঁ আপকে সাথ চলুঁগী।" [illegible] জনক [illegible] আপকো, ঋষি বালিকাওঁকে সাথ [illegible] নহীঁ। [illegible] বিয়া—[illegible] সীতা তপোবন দেখনে [illegible] হী। জনক অব ক্যা করে—লে চলে। অহা! সীতা তপোবন দেখকর কিতনী খুশ (খুশী) ঋষি বালিকাওঁকে সাথ খেল কর উনকা জী নহীঁ অঘাতা থা। হরিনকে বচ্চোঁকো দো দো হাথ নর্ম ঘাস, চিড়িয়োঁকো চনা ঔর বালক বালিকাওঁকো ফল মূল খিলা কর ভী উনকা জী না অঘাতা থা। [illegible]

पन्द्रहवाँ पाठ।

পাইবার = पानेके	কেও = कोई भी
পর = बाद	কাকে = किसको
হয় = हुई	ফেলিয়া = छोड़कर, फेंककर
রাখেন = रखा, रखा था	ছায়ায় = छायामें, साथमें
বড়টির = बड़ीका	আবদার = ज़िद
ছোটটির = छोटीका	ভাব = प्रेम

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাজার একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন ঊর্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তাঁরও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুত-কীর্তি। তাঁরাও সীতার মত জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাঁদের বড়ই ভাব, কেউ কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তাঁরাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন। সীতার শিশুকাল গিয়াছে, বয়সকালও যায় যায়। তাঁর শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চঞ্চলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বকুনি নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব নত করিয়া দিল

१५

सीताजीके पानेके बाद राजाके एक लड़की हुई, उसका नाम रखा – ऊर्मिला। कुशध्वज नामक जनकके एक भाई थे, उनके भी दो लड़कियाँ थीं—बड़ीका नाम माण्डवी, छोटीका

नाम सुनकोश्रि (था)। ये भी सीताके साथ जनकके घर रहती थीं। सीताके साथ उनका बड़ाही प्रेम था। कोई किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताके व्याही रहकर ये भी सीताके साथ चली गईं।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने जानेपर है। उनके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। अब और वह चञ्चलता नहीं है, वह ज़िद नहीं है, वह बहाना नहीं है। मधुर लज्जा ने आकर ताना सब दूर कर दिया।

सोलहवाँ पाठ।

[illegible] = प्राणभरके — [illegible] = मुलाकात भी

[illegible] = बहिनोंका — [illegible] = पड़ोसी

[illegible] = प्यार करती थीं — पड़ोसी सब

[illegible] = अपने अपनेपर — [illegible] = सेवे रहती थीं।

[illegible] = खिलना, खिलार — [illegible] = सिसौका भी

[illegible] = चिन्ता — [illegible] = बाढ़ी

[illegible] = जहाँ तब — [illegible] = [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

(११)

सीता इस समय भी सबके मा मालकी जैसा मनुष्या करती थी, हरिणोंको जैसे प्यार करती थी, मोरर मयूरिनोंपर वैसे ही अपने पराई पर दया करती थी। सीता मानो सभीके दुःख सुखकी चिन्ता करती थी। सखियाँ सीताको छोड़कर एक छन भी नहीं रह सकती थीं, क्योंकि सदा उनको घेरे रहती थीं। यह सखियाँ सबकी सीताकी सब कुछ थीं। सीता जिनको चाहती थीं, उनको ही वे सबसे प्यार करती थीं, [illegible] करती थीं, [illegible] करती थीं। [illegible] देखने से [illegible] नहीं [illegible] सीताका [illegible] नहीं [illegible] देखकर [illegible]

राज्यमें हाटबाटमें प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही सीताके रूप गुणकी बातें।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब देशोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी। सभी सीताको पानेके लिये राजर्षिके पास आने जाने लगे। किसी किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीताको हरनेका भय भी दिखाया। राजर्षि जनककी नींद टूटी।

"ऐसी सोनेकी चांद लड़की किसको दूंगा? कौन इसका यथार्थ आदर कर सकेगा? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा? सीताको आदरसे मैं ही किस तरह रख सकूंगा?" यही चिन्ता उनके मनमें उठी। परन्तु चिन्ता करके क्या होगा?—"लड़की तो ब्याहनी ही होगी। अब किसके पास दूं? कौन उपयुक्त वर (है)? किसे देनेसे लड़की सुखी होगी? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (इस) रत्नकी रक्षा कर सकता। [illegible] इस कन्याको [illegible] भी किस तरह [illegible] [illegible]

अट्ठारहवाँ पाठ।

পণ = प्रण

সব চেয়ে = सबसे

হরধনু = हरका धनुष

ভাঙা = तोड़ना

যাইয়া = जाकर

রব পড়িয়া গেল = धूम मच गई

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁহার বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁহারা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁহারা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁহাদের গৌরব আছে, তাঁহারা আনন্দিত হইলেন।

আর আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজারই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की, पृथिवीकी सार रत्न सीता(है)—वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—हरका धनुष तोड़ना।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्य में घोषित हुई। जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए। वीर रहनेके कारण जिनका गौरव है वे आनन्दित हुए।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा कौन आगे जाकर

सीता लाभ करेगा—इसके लिये सभी राज्योंमें तय्यारियोंकी धूम मच गई।

उन्नीसवाँ पाठ।

এ পর্য্যন্ত = अबतक	কেউবা = कोई भी
যত = जितने	কাজেই = लाचार हो
হাতী = हाथी	একে একে = एक एक करके
সিপাই = सिपाही	জাঁকজমক = शानशौकत
সান্ত্রী = हथियारबन्द सिपाही, पहरेदार	আসাই = आना ही
	মহাভাবনায় = बड़ी चिन्तामें
লোক-লস্কর = मनुष्य फौज	এত সাধের = इतनी प्यारी
ধনুক = धनुष	এনে দাও = ला दो
পিঠটান = भागना	প্রভু = ईश्वर

---

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। সঙ্গে হাতী, ঘোড়া, সিপাই-সান্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই। কার আগে কে ধনুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ। কোন রাজা ধনুক দেখিয়াই পিঠটান [illegible] তুলিতে চেষ্টা করিলেন, কেউবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহ পারিলেন না। তারা [illegible] একে একে সব চলিয়া [illegible]। [illegible]

— না হইলে ঈশ্বরের কি কিছু লাভ হয়? রাজপুত্রের কেমন [illegible] করিয়া অমনই সারা হইল।

তখনই [illegible] — [illegible] এই [illegible] হইবে না? যদি কেহ এমন প্রতিজ্ঞা করিলেন। তখন [illegible] এমন হইল — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] প্রভু' [illegible] ? [illegible] প্রভু।"

(१८)

इतने में जितने राजा, राजपुत्र (थे) सब आये। आपने अपने घोड़े, सिपाही-पहरेदार, मनुष्य जोड़ जितने (थे), उनकी संख्या नहीं (है)। जिन्होंने पहिले चौन धनुष उठाया, सब [illegible] है। कोई राजा धनुष देखकरही भागे, किसीने उठाकेही देखा भी, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चोट न चढ़ा सका — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं हुआ। किसी [illegible]

[illegible]

करती थी। हाथ जोड़कर आँखोंमें आँसूभरे हुए ईश्वरको पुकारती और कहती थी—"प्रभु! सीताका वर कहाँ (है)? ला दो प्रभु।"

बीसवाँ पाठ।

ঠাট্টা = ठट्ठा	বল = कहो
সই = सखी	উহা = वह
কপালে = भाग्यमें	অদৃষ্ট = भाग्य, कर्म
জুটিবার = जुटनेका, मिलनेका	ফিরিয়া গেলেন = लौट गये
যা হয় = जो हो, जो जी चाहे	

(২০)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা আসিলেন, রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না পারিয়া ফিরিয়া গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল না। তা না উঠিলে কি? তবু উঁহার বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে আর তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা করে। এক এক রাজা আসে, আর অমনি 'সই, তোর 'বর এলো' 'বর এলো'" বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি—"সই, তোর কপালে বিয়ে নাই" বলিয়া উপহাস করিতে থাকে।

[illegible] উদ্বেগ নাই। [illegible] বলেন, [illegible] অবশ্য [illegible] ইচ্ছা করিয়া [illegible] যেমন

সৃষ্টিছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অন্যের জুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।"

(২০)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुषपर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उसके नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनको विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा "वर आया" "वर आया"" कहकर तङ्ग करती हैं। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी,तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है" कहकर दुःख करती हैं।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है)। सीता कहती हैं—"भगवान्ने जिसको निर्देश किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणका रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा।" सखी कहती हैं "तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे यमराज सिवा दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।"

सीता कहती थी—"पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

कलेजा काँप उठा। सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—सावित्री यह समझकर कि कोई सत्यवानको छीन लेनेके लिये आता है चिन्तित हुई।

तेईसवाँ पाठ।

হাত = हाथ
আপন = अपना
চেপে ধরেন = दबा धरती है
ভয় ভয় কর্‌চে = डर मालूम होता है
কাঠ = लकड़ी
কেটে = काटकर
চল = चलो
কাটিতে = काटनेके लिये
উঠ্‌লেন = उठे, खड़े
তলায় = नीचे
দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर
পানে = ओर
রইলেন = रहो
হয়েছে = हुआ है
ডেকে ডেকে – पुकार

নেমে এস = उतर आओ
ফুরিয়ে গেল = बीत गया
আঁধার = अँधेरा
খণ্ডন যায় = काटी जाय
ব্যথায় = दर्दसे
মাথার = माथेकी
দারুণ = भयानक, जोरकी, कष्टकर
ছটফট = छटपट
ঢলে পড়লেন = ढलक पड़े
দেহ = शरीर
কালি = काला
হয়ে গেছে = हो गया है
মুখ দিয়ে = मुँहसे
ফেনা উঠছে = फेननिकलता है
আঁখির পাতা – आँखकी पलक

(২০)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরেন। সাবিত্রী বল্‌লেন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্‌চে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাটতে গাছের উপর উঠ্‌লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলেন। "আলো ভালের ধূপ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারী হয়েছে—এখন নেমে এস!" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বলচেন—নেমে এস, এখন নেমে এস! বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পর আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস!

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক-পা দু-পা করে নীচে নেমে আস্‌চেন, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—দারুণ মাথার ব্যথায় ছট্‌ফট্‌ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢলে পড়্‌লেন। সাবিত্রী ছুটে এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেন উঠ্‌ছে আঁখির পলক পড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(२१)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(২৪)

একধারে কাঠের বোঝা, একধারে স্বামীর দেহ—কোলের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা এখন কি করবেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথলে উঠল—জোর ক'রে তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে বনের ভিতর ব'সে রইলেন।

আঁধার গভীর আঁধার রাত। ঝুরঝুরি বাঁশেদের ঝাড়ে শেয়াল ডাকছে, বাদুড় ঝুলছে, গাছের পাতা খসে পড়ছে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মুক্তি ধ্যান করছেন। দেখতে দেখতে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হয়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগলে রইলেন।

(२४)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे वनमें अकेली इस समय क्या करेगी! कलेजा फटकर उनको रुलाई आई—जोर करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठाकर वनमें बैठी रहीं।

अँधेरी गहरी अँधेरी रात (है)। घनघोर बँसवारेमें सियार बोलता है, चमगादड़ झूलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी मुक्ति ध्यान करती है। देखते देखते दो पहर रात्रि बीत गई [illegible] है।

काठकी भाँति कठोर होकर सावित्री स्वामीके शरीरकी रक्षा किये रहीं।

উমা।

पच्चीसवाँ पाठ।

ক্রমে ক্রমে = धीरे धीरे
শিশু = बच्चा
একটু একটু করিয়া = थोड़ा थोड़ा करके
একটুখানি = छोटा, थोड़ा
জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ = ज्योति भरा, चाँदनी भरा
সেরূপ = उस तरह
দিন দিনই = दिनों दिन
বাড়িতে লাগিল = बढ़ने लगा
লয় = लेता था
চাঁদপানা = चाँद सरीखा
জোছ্না মাখা = ज्योति भरा
বিলাইতেই = बाँटनेको लिये

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটী বড় হইয়া উঠিল। প্রতিপদের চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু একটু করিয়া বড হইয়া জ্যোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া উঠে, হিমালয়ের শিশু মেয়েটিও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড হইয়া উঠিল। দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল। মেয়েটীকে যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়। যেমন চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছ্নামাখা শরীর; তা আবার ননীর মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয়! মনে হয় যেন পৃথি-

বীরে আনন্দ বিলাইতেই ভগবান মেয়েটিকে আনন্দধাম থেকে পাঠাইয়া দিয়াছেন। হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বহু লোকজন আসিতে লাগিল। তাহারা ও মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে ছিল, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে তাঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাঁহাদের আর ক্ষুধা তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটি চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়েন।

उमा।

(२५)

धीरे धीरे उमा कन्या बड़ी हो गई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज़ रोज़ थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी यही कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई। दिनों दिन उसका सौन्दर्य बढ़ने लगा। लड़कीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह मोहमें पड़ (जाता है)। जिस तरह चाँदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिर्मय शरीर (है), वह फिर मक्खनसा कोमल है) ऐसी लड़की क्या दूसरी कहीं है? मनमें आता है मानो इस दुनियामें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवानने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है। हिमालयके

[illegible]

[illegible]

[illegible] पाठ १

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	

হীরার ঝিনুক এনে দিলেন। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে মা' বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৫।৬ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্বতীর পুতুলের অভাব কি? কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, টিনের পুতুল, আর তাদের কত রকমের জামা। সাটিনের জামা, মখমলের জামা; লাল, নীল, বেগুনে, কত রঙের জামা, আর তাতে হীরা, মাণিক, ঝক্ ঝক্ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদের নিয়ে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ আহ্লাদই না হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া যাচ্ছে। উহার তীরে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত ঝিক্‌মিক্ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলের বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। ঠাকুর বাড়ী হইতে কত মোহনভোগ আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তরকারী পরিবেশন করে।

(२६)

माने प्यार करके महर्षीके मिले मोतिकी दूधकी कटोरी और हीरेका चमच ला दिया। पार्वती जब तोतली बोलीमें "मा" कहती (थी) तब मेनकाका आनन्द कौन देखे। धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था पांच चार वर्षकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय है। पार्वतीको गुड़ियेका क्या अभाव? कितनी ही सोनेकी पुतलें, चांदीकी पुतलें, टिनकी

पुतली और उनकी कितने रंगकी पोशाक ; साटनकी पोशाक, रेशमकी पोशाक लाल,नीली,बैंगनी कितने रङ्गकी पोशाक और उसके ऊपर हीरा,मानिक,झिलमिल करता है। पार्वती खेलकी साथियोंके साथ गुड़िया खेलती है। गुड़ियेका व्याह होता है और कितनी ही हँसी खुशी होती हैं। राजमहलके पास ही गंगानदी बह चली है। उसके किनारेपर सफेद सफेद बालू चाँदीकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती गुड़ियोंको लेकर उसी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोनेकी हाँड़ीमें बालू डालकर भात सिझाती है और गुड़ियेके व्याहके समय सभीको निमन्त्रण करके खिलाती है। घरके मकानमें जितनेही मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालमें बालूका भात और पत्तेकी तरकारी परोसती है।

सत्ताईसवाँ पाठ ।

মামার বাড়ী = ननाईके घर	ছবির = तस्वीरकी, तस्वीरदार
কান্না = रोना	বই = किताब
খেলাধুলায় = खेल कूदमें	আনিয়া দিবেন = ला दो
পিসিমার = मौसीका	সে গুলি = वह सब
পুতুল = गुड़िया	হাসে = हँसती थी
কড়া = खूब पक्का	[illegible] = निगलना
বাসন = बर्तन-बासन	चाहता है
[illegible] = समाप्त	

(২৭)

যার সেই পুতুলটিকে জামাই-বাড়ী নিয়ে গেল, পার্ব্বতী কান্না আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধুলায় পার্ব্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মায়ের মনে আর আনন্দ ধরে না। এখন পার্ব্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্ব্বতরাজ বাড়ীতেই গুরুমা রাখিয়া দিলেন। পার্ব্বতী সোনার পাতে হীরার কলম দিয়া 'ক' 'খ' লিখিতে লাগিল। ছয় মাসের মধ্যেই বর্ণ, বানান, শেষ হইয়া গেল। এখনত ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন পার্ব্বতী সেগুলি দেখে আর হাসে। কি সুন্দর ছবি! একটা বেড় কিনা একটা হাতী গিলিতে চায়। বেড়ের কি সাহস। পার্ব্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেড় কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে?

(২৮)

और कन्या गुड़ियेको जमाईके घर ले जानेपर पार्वती रोना आरम्भ करती है। उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती। इसी भावसे खेलकूदमें पार्वतीका दिन बीतने लगा। यह सब देखकर बाप माईके मनमें आनन्द नहीं समाता। इसके पार्वतीका लिखना पढ़ना सीखनेका समय हुआ। यह राजकन्या (है), इसे तो स्कूल जाकर पढ़ना न

होगा। पर्व्वतराजने घरमें ही गुरुघामी रख दी। पार्व्वती सोनेके पत्तेपर हीरेकी कलमसे 'क' 'ख' लिखने लगी। छः महीनेके भीतरमें ही संयुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया। अब तो तस्वीरदार किताब पढ़नेका समय (है)। पिताने प्यार करके किसको ही सुन्दर सुन्दर तस्वीरवाली किताब ला दी। पार्व्वती यह सब देखती और हँसती थी। कैसी सुन्दर तस्वीर है! एक बेंग, एक हाथी निगलना चाहता है। बेंगका कैसा साहस है! पार्व्वती तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन ही मन विचारती (है), बेंग क्या कभी हाथी निगल सकेगा।

अट्ठाईसवां पाठ।

নানা = बहुतसे	[illegible] = मगर
[illegible] = तरहके	[illegible] = बेङ्ग
[illegible] = पत्ता	[illegible] = मकड़ा
[illegible] = तोता	[illegible] = जी लगाकर
[illegible] = पक्षी	[illegible] = पहाड़
[illegible] = छोटी लड़की	[illegible] = चढ़ाती
[illegible] = बड़ाना!	[illegible] = प्यार करे

(২৮)

[illegible]

রাজার গল্প, শীত বসন্তের গল্প, কত গল্পই বা পার্ব্বতী শিখিয়া ফেলিল। পার্ব্বতী খুব মনযোগ দিয়া লেখা পড়া করিত। রাজকন্যা হইলে কি হবে, তার একটুকুও দেমাক ছিল না। সে গুরুমাকে খুব ভক্তি করিত। গুরুমা যাহা বলিতেন, সে তাহাই করিত। পড়ার সময় একটুকুও দুষ্টামি করিত না। কাহারও নিকট মিথ্যা কথা কহিত না। এমন মেয়েকে কে না ভাল বাসে? তোমরাও যদি মন দিয়া লেখাপড়া কর এবং সর্ব্বদা সত্য কথা বল, সকলেই তোমাদিগকে ভালবাসিবে।

(২৮)

तस्वीरवाली किताबोंमें कितनी तरहकी कविता और कहानी है। तोता पक्षीकी कविता, छोटी लड़कीके ब्याहपर कविता, कितनी ही तरहकी कविता (है)। और कहानियां? सियार और मगरकी कहानी. हंस बेंगीकी कहानी, नकट राजाकी कहानी, सीत बसन्तकी कहानी. कितनी ही कहानियां पार्वतीने सीख डालीं। पार्वती खूब जी लगा कर लिखना पढ़ना करती थी। राजकन्या होनेसे क्या होगा, उनको कुछ भी अहङ्कार न था। वह गुरुआनीको खूब भक्ति करती थी। गुरुआनी जो कहती थीं वही करती थी। पढ़नेके समय कुछ भी बदमाशी नहीं करती थी। किसीसे झूठ नहीं बोलती थी। ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता! तुमलोग भी यदि जी लगाकर लिखना पढ़ना करो और सदा सच बात बोलो, (तो)सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे।

उन्नीसवाँ पाठ।

পারিত = सकता थी	স্বামীকে = पतिको
রাঁধিতে = रसोई बनाना	ছুটাছুটি = दौड़-धूप
জলখাবার = जल पानकी	লুকোচুরী = लुकाचोरी
[illegible] = [illegible], [illegible]	বাল্যকাল = लड़कपन
শিখিয়াছিল = सीखा था।	যৌবন = जवानी
[illegible] = [illegible]	চলিয়া গেল = बीत गया
কাটিতে = काटने	

(२०)

[illegible]

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, यही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सीखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थीं)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके संग दौड़-धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

तीसवाँ पाठ।

বাড়িয়া উঠিল = बढ़ उठा
বিকসিত হইয়া উঠে = खिल उठता है
চেহারা = चेहरा
চিত্রকর = चित्रकार तस्वीर
আঁকিয়া রাখিয়াছে = अङ्कित कर रखी है
পায়ের = पैरकी
অঙ্গুলিতে = उंगलीमें
ফাটিয়া যাইত = फट जाती
[illegible]

আলতার রস = অলতীকা রস   হাঁটু = ঘুটনে
বাহির হইতেছে = নিকল রহা   সরু = পতলা
হৈ   শিরিষ = সিরীস
মাটীতে = মিট্টীমেঁ   কুসুম = ফুল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল—তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল। সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাঁটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আলতার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুন্দর, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই না কত! লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরিষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(३०)

पार्वती का शरीर स्वभावतः ही सुन्दर है। अब यौव-

नका समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानो और भी बढ़ उठा! सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि किसी चित्रकारने मानो एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उंगलियोंमें जो नख हैं वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था मानो नखसे अन्तीका रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमशः पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

इकतीसवाँ पाठ

[illegible] = सड़कें	[illegible] = पीछेसे और
[illegible] = सीढ़ियाँ	[illegible] = घूमते फिरते थे
[illegible] = तुलना, उपमा	[illegible] = घूमते घूमते
[illegible] = मोड़	[illegible] = [illegible]

চুলের = বালোঁকী	ফলিত = ফলনা
ঘন = ঘনা	ফোঁটা = বুঁদ

(৩১)

পার্ব্বতীর গলায় মুক্তার মালা। শিশিরের ফোঁটার মত সাদা সাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর ঝক্ ঝক্ করিত। সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দ্রের তুলনা দিয়া থাকে। কিন্তু পার্ব্বতীর মুখশ্রীর নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই পরাজিত। সেই অবধি দিনে চাঁদ উঠে না, আর রাত্রিতে পদ্ম ফোটে না। পার্ব্বতীর চক্ষু দুটি যেমন বিস্তৃত, নাসিকা তেমন উচ্চ এবং ভ্রূদুটি তেমন লম্বা। আর চুলের কথা কি বলিব। ঘন কৃষ্ণ কেশ, তাহা পেছনদিক দিয়া হাঁটু পর্য্যন্ত পড়িয়াছে। যৌবনকালে পার্ব্বতী এতই সুন্দরী হইয়া উঠিল।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন। তিনি সর্ব্বদা ইচ্ছামত এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান। এক দিন হাঁটিতে হাঁটিতে তিনি পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের বাড়ীতে উপস্থিত হইলেন। হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। তখনকার মুনিঋষিদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল। তাঁহারা যাহা বলিতেন, তাহাই ফলিত। হিমালয়ের আদেশে পার্ব্বতী আসিয়া মহর্ষি নারদকে প্রণাম করিল। মহর্ষি পার্ব্বতীকে আশীর্ব্বাদ করিয়া বলিলেন, "দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন, আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে"। মহর্ষির কথা বৃথা হইবার নয়। পর্ব্বতরাজ তখন মহাদেবকে জামাতারূপে

পাইবেন ভাবিয়া খুব খুশী হইলেন। বিবাহের বয়স হইলেও পর্ব্বতরাজ পার্ব্বতীর বিবাহের কোন আয়োজন করিলেন না। তিনি জানিতেন মহর্ষির কথাই সত্য হইবে। সেজন্যই তিনি নিশ্চিন্ত ছিলেন।

(२१)

पार्वतीके गलेमें मुक्ताकी माला (है)। शिशिरके बूँदकी तरह सफेद सफेद मोतियाँ उसके कलेजे पर चमकती हैं। सुन्दर मुखके साथ मनुष्य कमलकी अथवा चन्द्रकी तुलना दिया करते हैं। परन्तु पार्वतीको मुखश्रीके सामने चन्द्र और कमल दोनो ही पराजित (हैं)। इसी भयसे दिनमें चन्द्रमा नहीं निकलता और रातमें कमल नहीं खिलता है। पार्वतीकी आँखें दोनो जैसी बड़ी, नाक वैसी ही ऊँची और भौंहें दोनो वैसी ही लम्बी (हैं)। और केशकी बात क्या कहूँगा। घने काले केश, वे पीठसे घुटनेतक गिरे हैं। यौवनके समय पार्वती इतनी ही सुन्दरी हो गई।

देवताओंके देशमें नारद नामके एक विख्यात महर्षि हैं। वे सदा इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते (हैं)। एक दिन घूमते घूमते वे पर्वतराज हिमालयके मकानपर उपस्थित हुए। हिमालयने बड़े आदरसे उनकी अभ्यर्थना की। उस समयके मुनि ऋषियोंकी बड़ी क्षमता थी। वे जो कहते थे, वही फलता था   हिमालयके आदेशसे पार्वतीने आकर महर्षि नारदको प्रणाम किया। महर्षिने पार्वतीको आशी

वाद देकर कहा—'देव-देव महादेव तुम्हें विवाह करेंगे, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सोहागिनी होओगी।" महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान महादेवको जामातारूपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे, (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

छत्तीसवाँ पाठ।

পূর্ব্বে = पहिले
মাখিলেন = लगाया, मला
একদা = एक समय
বাঘছাল = बघछाल
দূরে থাকুক = दूर रहे
পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्
পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर
সেই অবধি = तबसे
রাখিলেন = रक्खी
পারেন = सराहीं

(৩২)

ভগবান মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয় কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক বরং তাহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন!

(২২)

भगवान् महादेवने पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सभोंका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया। सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुईं। दक्षने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो सतीने अग्निकुण्डमें कूद कर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना छोड़

[illegible]

[illegible] पाठ।

[illegible]

(३३)

[illegible]

দের মতন বিধান করেন। তিনি যে কি জন্য ধ্যান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না। দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম। এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্যকলাপের কারণ নির্দ্দেশ করা যায় না।

পর্ব্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না। তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্ব্বতী ও তাহার জয়া-বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন "তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব-দেব পশুপতির সেবা কর।" পরদিন হইতে পার্ব্বতী পশুপতির সেবায় নিরত হইল। পার্ব্বতী যুবতী, সুন্দরী, এমত অবস্থায় তপস্যাস্থানে গমন করিলে তপস্যার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্ব্বতীকে নিষেধ করিলেন না। কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন। মহাপুরুষগণের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে। যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রূক্ষেপও করেন না। মহাপুরুষ-প্রকৃতির লক্ষণই এই। পার্ব্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্য ফুল স্নানের জন্য জল আনিয়া দিত, যজ্ঞের স্থান পরিষ্কার করিয়া রাখিত।

(২২)

सुनो सावहनि होकर मानवि एक कन्निका कुछ

जलाया। अपार प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग! दूसरा मनुष्य कानेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता! ऐसी कठोर अवस्थामें उन्होंने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान (हैं), उनका ध्यान करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं), वे सबोंका मङ्गल विधान करते हैं। वे किस लिये ध्यान करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते। ईश्वरगण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यका ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्णय किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि भगवान महादेव उनके राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी और सीमा न रही। उन्होंने महादेवके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। तदनन्तर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी सखी विजया नामकी दासी सखियोंसे कहा 'तुम सब रोज जाकर देव देव महादेवकी सेवा करो।' दूसरे दिनसे पार्वतीने महादेवकी सेवा की। पार्वती भी (थी), सुन्दरि (थी) ऐसी अवस्थामें तपस्याके ध्यानमें लगनेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता, यह समझकर भी सेवा देनेसे पार्वतीको मना नहीं किया; कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे। अपरूप सुन्दरताका किस कारण मनुष्यके चित्त चञ्चल नहीं (है)। जिस जब कारणसे

साधारण मनुष्य बंधन को उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और उनका स्थान साफ़ कर रखती (थी)।

चौंतीसवाँ पाठ।

পাত্রী = स्त्री	অনুরোধ করা = मनाना
অনুসন্ধান = खोज	সুতরাং = इसलिये
কোথাও = कहीं भी	মিলিয়া = मिलकर
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন	ঠিক = ठीक
= प्रलय मचा सकते हैं	পুনরায় = फिर

(৮৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটি উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটি কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ বহু পরিশ্রম করিতেছেন বহু দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ও সতীবিয়োগের পর হইতে সংসার বন্ধন ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার পাণিগ্রহণে অনুরোধ করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা বলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং তাঁহারা মহাদে

মিলিয়া ঠিক করিলেন যে, একটি সুন্দরী কন্যার সহিত মহাদেবের বিবাহ সংঘটিত হইলে, পশুপতি নিজেই সন্ন্যাস ত্যাগ করিয়া পুনরায় গৃহস্থ হইবেন। এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আসিয়া সংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাওয়া গিয়াছে। পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের কন্যা পার্ব্বতীর ন্যায় গুণবতী ও রূপবতী রমণী স্বর্গে, মর্ত্তে, কোথাও আর নাই। সুতরাং ইহার সহিতই মহাদেবের বিবাহ দিতে হইবে। মহর্ষির কথা শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন। কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করিতে সম্মত হইলেন না।

(३४)

सतीके देहत्यागके बादसे भी देवगण महादेवके लिये एक उपयुक्त पात्रीको खोज करते हैं। सती जैसी गुणवती और रूपवती थीं, ठीक इसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देवतागण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घूमते हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती है। महादेव भी स्त्रीवियोगके बादसे संसारवासनाको त्याग करके सन्यासी बने हैं। उनको फिर गार्हस्थ्यधर्ममें लाना देवताओंका प्रधान उद्देश्य होनेपर भी वे साहस करके महादेवके पास यह बात कह नहीं सकते। वे जानते हैं कि महादेव क्रुद्ध होनेपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं। इसलिये उन सभोंने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी कन्याके

द महादेवका विवाह होजानेसे उससे स्वयं ही सन्तान होकर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद मुनिने आकर समाचार दिया कि शिवको अद्भुत पात्री मने दिनोंसे चाह रही है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या पार्वतीकी भांति गुणवती और रूपवती रमणी जगतमें, उसके सिवा और नहीं है। इसलिये इसके साथ ही महादेवका विवाह करना होगा। महर्षिकी बात सुनकर देवगण बहुत आनन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके पास विवाहका प्रस्ताव करनेमें सक्षम न हुए।

समाप्त

कामिनीरंजन तैल।

यह केश [illegible] माथेकी बीमारियों का नाश, केशोंकी कान्ति, चमकीले और मनोहर बनानेमें सुघड़ कारीगर और सुगन्धमें फूलराज बसन्तके समान है। इस तेलको लगाते ही दिमाग तर हो जाता है, मस्तिष्कमें शक्ति मालूम होने लगती है, आंखोंमें तरावट आती है और पास बैठे हुए मनुष्य इसकी सुगन्धसे मस्त हो जाते हैं। इसकी सुगन्ध बाज़ारू तेलोंके समान क्षणिक नहीं बल्कि स्थायी है। इसमें वैद्यक मतसे बड़ी गुणकारी दवाएँ मिलायी गई हैं जिनसे बालोंका झड़ना, माथेका दर्द, माथेकी दर्द, दिमागकी कमज़ोरी, स्मरण शक्तिकी कमी, आंखोंमें आगे अंधेरा आ जाना, अधिक परिश्रम करनेपर मस्तिष्कका शून्य मालूम होने लगना, आंखोंमें चक्कर आना आदि बीमारियां बहुत जल्द आराम होती हैं। इसमें एक बाज़ारू तेलोंके समान [illegible]

[illegible]

[illegible]

नरसिंह प्रेस

कलकत्ते की छपी हुई मनुष्यमात्रके देखने योग्य अपूर्व और सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

पाठक! नीचे उन पुस्तकोंका विज्ञापन दिया गया है जो हिन्दी संसारमें यथेष्टरूपसे स्थान कर रही हैं। जिनके ही पढ़ने से बहुत से पढ़कर विद्वान हुए और होते जाते हैं। यह कारखाना और कम्पनी केवल पैसा कमाने देकर लाभ उठानेके लिये नहीं बल्कि संसारमें विद्या फैलाने और सर्वसाधारणको लाभ पहुँचानेके लिये खोले गये हैं। ध्यान रहे कि इस प्रेसकी छपाईकी सुन्दरता, पुस्तकोंकी उपयोगिता और दाम-कमीकी सफाई उसकी प्रशंसनीय हो रही है। आशा है - पाठकगण एक बार अवश्य मँगावेंगे।

स्वास्थ्यरक्षा या तन्दुरुस्तीका बीमा।

संसारमें रुपया पैसा तन्दुरुस्तीके बराबर कोई चीज नहीं है। संसारमें जितने काम हैं सबोंके लिये तन्दुरुस्त

रहनेकी सब से अधिक ज़रूरत है, हमारी सास्त्र रचा उन्हीं भेदोंको बताती है, जिससे मनुष्य तन्दुरुस्त रहकर संसारके सब काम कर सकता है। इसमें कोकशास्त्रके वे भेद जिनके लिये लोग कितने ही रुपये खर्च किया करते हैं, बड़ी सरलतासे समझा दिये गये हैं। साथ ही आजमाए हुए नुसखे, चुटकुले, कितनीही मजेदार दवाएँ, बहुतसी ज़रूरी रङ्गीन बातें जिससे बहुतही ज्यादा लाभ और सुख मिलकर इच्छा पूरी होती है इसमें साफ़ साफ़ लिख दी गई हैं। सच तो यह है कि यदि संसारके सभी सुख लूटने हों, यदि अपनी प्राणवल्लभाके प्रियतम बनना हो, यदि मोटी ताज़ी बलिष्ठ सन्तान की इच्छा हो और यदि डाक्टरोंको व्यर्थ पैसा न देना हो तो लाख रुपयोंका यह ग्रन्थ थोड़े ही दाममें इकट्ठा ज़रूर मँगाकर पढ़िये। इसमें वे सभी बातें मालूम हो जायँगी जो हज़ारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मालूम हो सकती हैं। दाम १।) डाकखर्च ।) सुन्दर मनमोहनी जिल्दवालीका दाम २) डाकखर्च ।)

देखिये 'जासूस" क्या लिखता है:—

"कोकशास्त्रकी जिन बातोंके लिये आजकल लोग पैसा और समय खोकर ठगे जाते दीखते हैं, उनके जरूरी और काममें लेने वाली बातें इस पुस्तकमें विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।"

देखिये "भारतजीवन" बनारसने लिखता है:—

"[illegible]"

अंगरेजी शिक्षा।

प्रथम भाग।

(तीसरी आवृत्ति)

आजकल बिना अङ्गरेज़ीके काम नहीं चलता। यह वही किताब है जो आइसी हिन्दी जाननेवालोंको बिना उस्तादके थोड़े ही दिनोंमें अङ्गरेज़ी सिखा देती है। केवल इसके पहिले भागको पढ़ लेनेवेही तार लिखना, चिट्ठियोंपर पता लिखना, रसीद हुण्डियाँ तथा मामूली अर्ज़ी लिखना और साधारण अङ्गरेज़ी बोलना, महीने दो महीनेमें ही आ जाता है। इस पुस्तकको पढ़कर व्यापारी, रेलमें, तारमें, डाकघरमें तथा छोटे छोटे कारखानोंमें काम करनेवाले बहुत ही ज़ियादा नफ़ा उठा सकते हैं। छपाई सफ़ाई मनमोहनी है। १५० सफ़ोंकी पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च /)

देखिये "हिन्दी-बंगवासी" लिखता है:—

"[illegible]"

है किसीकी सहायता लेनेकी आवश्यकता नहीं, स्कूल जानेका प्रयोजन नहीं जिस समय आपको फुरसत मिले उसी समय यह पुस्तक पढ़िये, थोड़े ही समयमें आपको अंगरेज़ीका ज्ञान हो जायगा।

देखिये "नारद" लिखता है :—

जो एक अक्षर भी अंगरेज़ी नहीं जानते वे भी इस किताब से थोड़े ही दिनोंमें अंगरेज़ी सीख सकते हैं।

दूसरा भाग।

व्याकरण वह विद्या है, जिसके बिना भाषा कभी शुद्ध नहीं होती और न भाषाका पूरा पूरा ज्ञान ही होता है। इसलिये जो महाशय अंगरेज़ी-शिक्षाका पहिला भाग पढ़ चुके हों उन्हें यह दूसरा भाग अवश्यही पढ़ना चाहिये। यह उनको भाषाको शुद्ध कर देगा, अंगरेज़ीकी लियाकतको बढ़ा देगा और अंगरेज़ी व्याकरण (English Grammar) के भेद अच्छी तरह समझा देगा। इस भागके पढ़जाने वालोंके लिये चिट्ठियाँ लिखना, पढ़ना, अंगरेज़ी अखबार पढ़ना और बोलना बिलकुल आसान होजायगा। दाम १) डाकखर्च ।)

देखिये "ब्राह्मण सर्वस्व" लिखता है :—

अंगरेज़ी सीखनेवालोंके लिये यह पुस्तक विशेष लाभदायक है, क्योंकि अंगरेज़ी व्याकरण सरल रीतिसे इसमें समझाया गया है। इस भाषाकी दूसरी पुस्तक इसके देखनेमें नहीं आई।

हितैषि "भारतमित्र" लिखता है :—

[illegible]

हितैषि "हिन्दवासी" लिखते हैं :—

[illegible]

तीसरा भाग।

[illegible]

गङ्गसरका "आसुम" लिखता है :

"इसी सिलसिलेमें यह तीसरा भाग बना है, इस भागमें भी शेष रही बहुत सी उपयोगी और आवश्यक बातें इस बारमें दी गयी हैं।"

देखिये 'हितवार्त्ता' लिखती है :—

पुस्तक बहुत कामकी है यदि कोई इसका ध्यानसे अभ्यास करे तो अंगरेजी भाषा में उसका प्रवेश हो जा सकता है। आशा है पहले दो भागोंके समान ही इसका आदर होगा।

चौथा भाग ।

इस भागमें अंगरेजी व्याकरण समाप्त करके और भी जितनी जरूरी बातें, चिट्ठी पत्रीके कायदे, वगैरह जो कुछ बाकी रह गया था सभी दे दिया गया है। कितने ही उपयोगी विषयोंसे यह भाग भरा है। इस दावेके साथ कह सकते हैं कि अंगरेजी शिक्षा चारों भागोंका ध्यान से पढ़कर याद कर लेनेवाला अगर अंगरेजीकी चिट्ठियां, अखबार, लिखना, पढ़ना न कर सके तो दूना दाम वापिस देंगे। दाम १) डाक महसूल ≶)।

देखिये "हितवार्त्ता" लिखती है :—

"इन चारों भागोंका अध्ययन यदि मन लगाकर किया जाय तो अंगरेजी आवश्यक ज्ञानके लायक ज्ञान अच्छा हो जायगा।"

हिन्दी बंगला शिक्षा।

प्रथम भाग।

(दूसरी आवृत्ति)

बंगला भाषाके बहुमूल्य और उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका हिन्दी जाननेवालोंको मज़ा दिलानेके लिये यह ग्रन्थ बड़े परिश्रम और खर्च से तय्यार किया गया है। इससे हिन्दी जाननेवाला बंगला और बंगला जाननेवाला हिन्दी बड़ी ही आसानीसे सीख सकता है और अच्छा ज्ञान पैदा कर सकता है। यह एकदम नई ढंगका ग्रन्थ है। जिन हिन्दुस्तानियोंको बंगभाषा में [illegible] लेना हो अथवा बंगालमें रोजगार, व्यापार आदि करना हो उन्हें यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिये। दाम ॥) डाकखर्च ।)

"भारतमित्र" लिखता है :—

[illegible]

[illegible] लिखता है —

[illegible]

दूसरा भाग।

पूरा पूरा बंगला व्याकरण इस भागमें समझाया गया है। इसमें बंगलाकी छोटी छोटी कहानियाँ और उनके सबका अनुवाद दे दिया गया है। इसे पढ़कर बंगलाके साधारण ग्रन्थोंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। बस, इसकी इस बंगला सिखानेके दोनों भाग मनुष्यको बंगला का पण्डित कर देनेके लिये पर्याप्त हैं। दूसरे भागका दाम ॥) डाकखर्च ≠)

अक्लमन्दीका ख़ज़ाना।

नीति ही मनुष्यको बुद्धि सिखानेवाली चीज है। बिना नीति पढ़े मनुष्यको सभा चातुरी नहीं आ सकती और न ज्ञान ही हो सकता है। इसीलिये इस ग्रन्थमें विदुर, कणिक, चाणक्य, शुक्राचार्य, शेखसादी, [illegible] आदि सभा नीतिकारोंकी अक्लमन्दी की बातें खोज खोजकर भर दी गई हैं। यह वह ग्रन्थ है जो मनुष्यको हाजिर जवाब, महाबुद्धिमान और नीतिज्ञ बना सकता है। यदि अपनी सन्तानको अक्लका पुतला बनाना हो तो यह ग्रन्थ अवश्य अवश्य पढ़ाइये। दाम १) डाकखर्च ≠)

देखिये "अक्लमन्दी" लिखता है

[illegible]

इसमें एक कृष्णा आते हैं, इस पुस्तकमें खूब चतुर चतुर [illegible] हटा दिखाते हैं। प्रत्येक हिन्दी प्रेमीको इसको एक प्रति मंगाकर अवश्य पढ़ना और इसकी शोभा बढ़ानी चाहिये।

रामायण रहस्य (प्रथम भाग)

मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति, स्त्री-धर्म, मित्र-धर्म, राजनीति युद्धशिक्षा, युद्ध-नीति आदिका जैसा सुन्दर खाका रामायणमें खींचा है वैसा किसी ग्रंथमें भी नहीं। रामायण सरीखा भावमय, सुमधुर, नीतिभरा, उपदेशपूर्ण, शिक्षाप्रद, भक्तिमय ग्रंथ कोई भी नहीं हुआ। उसी रामायणका सरल, बालबोध हिन्दीमें यह उपन्यासों सरीखा अनुवाद है। साथही वाल्मीकि, अध्यात्म, अद्भुत, मयङ्क, तुलसीकृत सभी रामायणोंकी बातें भी इसमें ले ली गई हैं। ग्रंथ हाथमें लीजिये, छोड़नेका जी न चाहेगा। बाल और अयोध्याकाण्ड की सभी बातें इसमें आ गई हैं। यदि सब रामायणोंका स्वाद लेना हो तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ?) डाकखर्च ?)

देखिये "बंगवासी" लिखता है :—

पुस्तक [illegible] उपन्यासोंकी सी है, पढ़नेमें जी [illegible] है [illegible]

नरसिंह प्रेस २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।

भारतमें पोर्चुगीज़। (इतिहास)

यह बड़ी पुराना इतिहास है जो अब तक हिन्दीमें छिपा हुआ था। इतिहास ही मनुष्यको जातीय शिक्षा और भविष्य उन्नतिकी शिक्षा देता है। फिरंगियोंने भारत पर किस तरह अपने पैर जमाये, भारतसे किस तरह अथाह धन-रत्न ले गये, किस किस अत्याचारोंसे उन्होंने दुर्बल भारतवासियोंको सताया, फिर अंगरेज़ोंने किस तरह उनसे उद्धार किया आदि सभी बातें सन् सम्बत, तारीख़ तथा बड़े बड़े लोगोंके मतके साथ इसमें लिखी गई हैं। इतिहास प्रेमी अवश्य इस पुराने इतिहासको पढ़ें और पढ़ायें। इससे बहुतसी नयी नयी बातें मालूम होंगी। दाम ॥), डाकखर्च ≠)

गुलिस्ताँ।

यह गुलिस्ताँ एक फूलोंका गुलदस्ता है। पर यह फूल वह है जो कभी मुर्झाता नहीं। इस ग्रन्थका क़रीब क़रीब सब भाषाओंमें अनुवाद होकर सभी देशोंमें गुलदस्ता सजा दिया गया है, पर बिचारी हिन्दी को यह गुलदस्ता अब नसीब हुआ है। गुलिस्ताँ के बनानेवाले शेख़सादीने इस ग्रंथमें वह काम किया है कि जिससे अभी तक यह इन्ट्रेन्ससे बी० ए० तकमें पढ़ाया जाता है। यह नीतिका

ग्रंथ है, इसको पढ़नेवाला सदा सुखी रह सकता है। लाख लाख रुपयोंकी एक एक बात अगर जाननी हो तो गुलिस्तां का सरल हिन्दी अनुवाद अवश्य पढ़िये। दाम १) महसूल ।)

[illegible] "[illegible]" लिखता है :—

यह पुस्तक हिन्दी साहित्यमें अपने विषयकी [illegible] हुआ है। इसकी [illegible] हिन्दी [illegible]। [illegible]

राजसिंह या चंचलकुमारी।

(उपन्यास)

राजसिंह ऐतिहासिक उपन्यासोंका राजा है। राजसिंहकी वीरता, धीरता, अपूर्व-प्रतिभा, चंचलकुमारीका अनुपमेय प्रेम, एक तस्वीर देखकर मोहित होना, औरंगजेबकी कूट नीति, कुटिल औरंगजेबको राजसिंहका तीन तीनबार पराजित करना और बारबार नीचा दिखाना; राजपूतानेकी अबलाओंका उनकी रक्षा करना, औरंगजेबके शाहीमहलका गुप्त प्रेम, और भयानक गुप्त घटनायें, आदि बातें राजसिंहकी आदर्श [illegible] बना रहा ऊँचा कर रही हैं। उपन्यास [illegible] है। ऐसा उपन्यास कम देखनेमें [illegible] महसूल ।)

देखिये कलकत्ते का प्रसिद्ध "बंगवासी" क्या लिखताहै:—

"इस पुस्तकमें लिखी बादशाही महाराणा राजसिंहकी ऐतिहासिक घटनाएं क्या पढ़ मनको अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है।"

मानसिंह वा कमलादेवी।

(मनोरञ्जन सम्पादक लिखित।)

यह उपन्यास नहीं बल्कि सुमन्मानी अमलदारीका बायस्कोप है। महाराणा मानसिंहकी वीर-कार्यावलीसे यह ग्रंथ भरा है। आह! अकबरके दाहिने हाथ मानसिंहके माथे कलङ्क! अपनी बहन को अकबरसे व्याह देना! हेमलताका प्रेम! महाराणा प्रताप का साहस भरा उद्गार! कपटी बहराम! विचित्र बाजीगर! नूरजहाँ और शेरशाहका प्रेम! सलीम का क्रोध! सन्यासी की कूट-बुद्धि! मानसिंहके दुराचार! भयानक युद्ध! मानसिंहकी वीरता! ओह!! कैसा आश्चर्यजनक, कौतुहल वर्द्धक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। विचित्र बात है! अद्भुद ग्रंथ है। दाम १॥) डाकखर्च ।)

देखिये "बङ्गवासी" क्या कहता है —

[illegible] यह [illegible] है [illegible] उपादेय भी है।

राधाकान्त ।

(उपन्यास)

सामाजिक उपन्यासोंका यह महाराजा है। यदि धन-मद मतवाले धनीयोंका चरित्र, बुरी संगतिका भयानक फल, खुशामदियोंकी विचित्र चालें, रण्डियोंका स्वार्थभरा प्रेम, दरिद्रोंकी सच्ची प्रीति, मित्रकी सच्ची मित्रता आदिका पूरा पूरा स्वाद लेना हो तो इसे पढ़िये। मालूम हो जायगा संसार कितने रसोंसे भरा है। कैसी कैसी चालें होती हैं। सभी घटनाएं विचित्र, अद्भुत और रसपूर्ण हैं। दाम १) डाकखर्च ।)

देखिये "बङ्गवासी" क्या कहता है :—

यह बड़ा ही सुन्दर उपन्यास है। इसमें दिखाया है कि धनवानोंने [illegible] मकानसे बाहर करके [illegible] पसन्द किया है। [illegible] एक [illegible] है निष्काम होकर [illegible] है।

गल्पमाला ।

उपदेश भरी तथा मनोमोहनी दस कहानियोंका यह एक कुंज है। सभी कहानियाँ सुगन्धित फूलोंकी तरह मनको प्रसन्न किये देती हैं। कभी करुणा, कभी प्रेम, कभी पुरुषकी जय और पापका पराजय, कहीं लोभ, कहीं

निर्लोभ आदि विषय पढ़ते पढ़ते पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता। इन उपन्यासोंका आनन्द एकमें मिलता है। दाम ।) डाक खर्च)

देखिये "हितवार्त्ता" क्या लिखती है:—

"बहुत ही अच्छा उपन्यास है।

बाल-गल्पमाला।

यह पुस्तक बालक-बालिकाओंको उन्नति पर पहुँचानेवाली एक कल है। जिसमें रामचन्द्रकी पितृभक्ति, भीष्म पितामहका प्रतिज्ञापालन, लक्ष्मण और भरतका भ्रातृप्रेम, श्रीकृष्णकी विनय, युधिष्ठिरका सत्य, वशिष्ठकी क्षमा, हरिश्चन्द्रका सत्य आदि और भी कितने ही गुण ऐसे भरे हुए हैं जो बालक बालिकाओंके हृदय पर चलते ही उन्हें उन्नतिकी मार्गपर ले जा सकते हैं। पुस्तक अत्यन्त पूजनीया है। दाम ।) डाकखर्च)

खूनी मामला।

(जासूसी उपन्यास)

खूनी मामला जासूसी उपन्यासोंका मुकुट है। भयानक [illegible]री, भीषण डकैती, खून, जासूसकी विचित्र कार्रवाई, डाकुओंकी चोट, जासूसका खूनीके फिराकमें जाना, आप फँसना

फिर बदला, चोरोंका उपद्रव, खूनीकी चालाकी, जासूसका रहस्य-भेद करना, खूनीको पकड़ना आदि विषय पढ़ते पढ़ते कभी पाठकोंको रोमाञ्च हो जायगा, कभी क्रोधसे आंखें लाल होंगी और कभी होंठों तले उंगलियां काटनी पड़ेंगी। दाम ।) महसूल ⁄)

अलिफलैला (पहला भाग)

यह वही पुस्तक है जिसका संसारकी करीब करीब सब देशोंकी भाषाओंमें अनुवाद हो चुका है। यह हिन्दी अनुवाद भी सरल और बहुत उत्तम हुआ है। इस पहिले भागमें केवल "अलाउद्दीन और चिराग" का यह किस्सा है कि पाठकोंको आप ऐसा भुला देगा। वाह! अलिफलैला भी एक अजायब भरा ग्रंथ है। औरतोंकी मक्कारी, देव, दानव, राक्षसके भयानक काम, फिर चोरोंका हमले भी करना आदि ऐसे विषय हैं कि जिनका ध्यान देनेसे बहुतसी बातें सीखनेको आती हैं और दिल भी खुश होता है दाम ॥) डाकखर्च ⁄)

प्रेम।

प्रेम वस्तुही प्रेम-तत्व है प्रेम-नगरमें यह [illegible]

निःस्वार्थ प्रेमका ऐसा सच्चा नमूना बहुत कम दिखाई ... प्रेमियोंको प्रेमका अवश्य आदर करना चाहिये दाम ।) डाकखर्च ।)

बीरबलकी हाज़िर जवाबी और चतुराई।

दो भाग।

बीरबलकी हाज़िर जवाबी संसारमें प्रसिद्ध है। इसमें ऐसे अनूठे सवाल हैं जिनको सुनकर मनुष्य घबरा जाय, परन्तु बीरबलने सभीका जवाब दिया है। यह पुस्तक है जिसको पढ़ते पढ़ते मारे हँसीके लोट जाना पड़ता है। पर मज़ा यह है कि इन किस्सोंमें उपदेश भरा है। अवश्य देखिये। दूसरा भी तय्यार हो चला। दो भागोंका दाम ।) ...

कालज्ञान।

कालज्ञान सचमुच कालज्ञान है। यह वह पुस्तक जिसके सहारे वैद्य अथवा हकीम बड़ी सहजमें ही जान सकते हैं कि किस समय कौन सा काम करनेसे रोगी ... हो जायगा। वैद्योंके लिये यह बड़े कामकी चीज़ है। दाम ।) डाकखर्च ।)

देखिये "हितवार्ता" क्या लिखती है :—

"...रोगियोंके लिये इस ग्रन्थकी अधिक आवश्यकता है। हर प्रत्येक वैद्य और गृहस्थके काम की है।"

नरसिंह प्रेस २०१ हरीसन रोड कलकत्ता।